पाक्षिक

क्रांतिरथ छत्तीसगढ़

सामाजिक क्रांति के पथ पर अग्रसर

कृष्ण-सुदामा की मित्रता अनुपम और अद्वितीय, सदैव देती है प्रेरणा - पं. प्रमोद शास्त्री

ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल में धूमधाम से मनाई गई कृष्ण जन्माष्टमी

◆ वर्ष - 23 ◆ अंक - 05 ◆ रायपुर 05 सितंबर 2026 ◆ पृष्ठ - 08 ◆ मूल्य-5/- रुपया

सार समाचार

नेपाल से 55 किमी दूर तिब्बत में 5-तीव्रता का भूकंप

नई दिल्ली। गुरुवार को तिब्बत में रिक्टर स्केल पर 5 तीव्रता का भूकंप आया. यह भूकंप नेपाल में हुई तबाही के एक हफ्ते बाद आया है. जर्मन रिसर्च सेंटर फॉर जियोसाइंसेज के मुताबिक, भूकंप जमीन से 10 किलोमीटर की गहराई पर आया था. अभी तक किसी तरह के नुकसान या चोट की कोई जानकारी सामने नहीं आई है. 26 अगस्त को नेपाल बॉर्डर के पास तिब्बत में ग्लेशियर टूटने से आई जबरदस्त बाढ़ से पहाड़ी इलाके के कई कस्बों और घाटियों में भारी तबाही मच गई. नेपाल त्रासदी के बाद गुरुवार तक एक हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है. इसके साथ ही चार हजार से ज्यादा लोग लापता बताए जा रहे हैं.

प्रदेशमें स्वाइन फ्लू के अब तक 158 मामले

रायपुर। छत्तीसगढ़ में स्वाइन फ्लू, एच1एन1 संक्रमण के अब तक 158 मामले सामने आ चुके हैं। स्वास्थ्य विभाग की ओर से जारी जिलेवार रिपोर्ट के मुताबिक रायपुर में सबसे ज्यादा 66 मरीज मिले हैं, इनमें 58 मरीज ठीक हो चुके हैं। जबकि 8 एक्टिव केस हैं। प्रदेश में कुल 121 मरीज रिकवर हो चुके हैं और 37 मरीजों का इलाज चल रहा है। राहत की बात है कि अब तक एच1एन1 से किसी मौत की जानकारी नहीं है। स्वास्थ्य विभाग के आंकड़ों के मुताबिक प्रदेश में एक दिन में 6 नए एच1एन1 पॉजिटिव मरीज मिले हैं। इसके साथ ही कुल सं₹ मितों की संख्या 158 हो गई है। इनमें से 121 मरीज डिस्चार्ज या होम आइसोलेशन के बाद रिकवर हो चुके हैं। जिलेवार स्थिति देखें तो रायपुर में सबसे ज्यादा 66 पॉजिटिव केस हैं। इनमें 58 मरीज रिकवर हो चुके हैं और 8 एक्टिव केस हैं। बिलासपुर में 20, दुर्ग में 17, रायगढ़ में 10 और धमतरी व कोरबा में 9-9 पॉजिटिव मरीज मिले हैं।राजनांदगांव में 4, बस्तर और बेमेतरा में 3-3 तथा कांकेर, जांजगीर-चांपा, जशपुर, महासमुंद, सक्ती, सूरजपुर सहित कई जिलों में भी एच1एन1 के मामले सामने आए हैं। दुर्ग में सबसे ज्यादा 9 मरीज उपचाराधीन हैं।

भारत की अंतरिक्ष यात्रा में ऐतिहासिक छलांग

केंद्रीय मंत्रियों और मुख्यमंत्रियों ने जीएसएलवी-एफ 17 के सफल लॉन्च पर जताया गर्व

नई दिल्ली । भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा जीएसएलवी-एफ 17/ईओएस-05 मिशन के सफल लॉन्च पर केंद्रीय मंत्रियों और मुख्यमंत्रियों ने गर्व जताते हुए देशवासियों को बधाई दी है। नेताओं ने कहा कि भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए एक शानदार उपलब्धि हासिल हुई है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने एक्स पर पोस्ट किया, ईओएस-05 को ले जाने वाले जीएसएलवी-एफ17 का सफल लॉन्च भारत की अंतरिक्ष यात्रा में एक और अहम कदम है। जियोसिंक्रोनस ऑर्बिट में स्थापित भारत के पहले इमेजिंग सैटेलाइट के तौर पर, ईओएस-05 हमारी पृथ्वी-निरीक्षण क्षमताओं को मज़बूत करता है और हमारे अंतरिक्ष कार्यक्रम की बढ़ती आधुनिकता को दर्शाता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में, भारत लगातार एक प्रगतिशील, आत्मनिर्भर और वैश्विक

स्तर पर प्रतिस्पर्धी अंतरिक्ष इकोसिस्टम बना रहा है। इसरो और भारतीय उद्योग के बीच बढ़ती साझेदारी इनोवेशन को बड़े पैमाने पर बढ़ावा दे रही है, स्वदेशी क्षमताओं को मजबूत कर रही है और हमारी अंतरिक्ष महत्वाकांक्षाओं के लिए नए रास्ते खोल रही है। पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने एक्स पर लिखा, भारत का अंतरिक्ष अभियान नई ऊंचाइयों पर। जीएसएलवी-एफ17/ईओएस-05 के सफल लॉन्च पर इसरो की टीम को बधाई। यह जियोसिंक्रोनस ऑर्बिट से भारत का पहला इमेजिंग सैटेलाइट है, जो विज़िबल, इन्फ्रारेड, मल्टी-स्पेक्ट्रल और हाइपर-स्पेक्ट्रल बैंड में एडवांस्ड इमेजिंग के ज़रिए हमारी पृथ्वी की निगरानी करने की क्षमताओं को काफी बढ़ाएगा। यह उपलब्धि अंतरिक्ष विज्ञान और तकनीक में विश्व-स्तरीय क्षमताएं विकसित करने की दिशा में भारत की लगातार प्रगति को दर्शाती है। साथ ही, यह उस उद्देश्य और महत्वाकांक्षा को भी दिखाती है जिसके साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हमारा अंतरिक्ष कार्यक्रम लगातार आगे बढ़ रहा है। केंद्रीय शिक्षा मंत्री प्रह्लाद जोशी ने एक्स पर पोस्ट में कहा, भारत की अंतरिक्ष यात्रा के लिए एक और गर्व का पल! जीएसएलवी-एफ17 ने ईओएस-05 को सफलतापूर्वक उसकी तय कक्षा (ऑर्बिट) में स्थापित कर दिया है।.

राष्ट्रपति भवन में छत्तीसगढ़ की प्रतिभा और समृद्ध लोक संस्कृति की विद्यार्थियों ने छोड़ी अमिट छाप

राष्ट्रपति से भेंट कर लौटे प्रतिभावान विद्यार्थियों ने मुख्यमंत्री से की सौजन्य मुलाकात

रायपुर / मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय से राजधानी रायपुर स्थित मुख्यमंत्री निवास कार्यालय में राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु से भेंट कर लौटे छत्तीसगढ़ के प्रतिभावान विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने सौजन्य मुलाकात की। विद्यार्थियों ने मुख्यमंत्री श्री साय को राष्ट्रपति भवन की अपनी यादगार यात्रा और राष्ट्रपति महोदया के साथ हुए आत्मीय संवाद के अनुभव सुनाए। मुख्यमंत्री ने विद्यार्थियों को इस विशेष अवसर के लिए बधाई देते हुए कहा कि राष्ट्रपति भवन में छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधित्व करना अपने आप में गौरव की बात है। प्रदेश के विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा, आत्मविश्वास और सांस्कृतिक प्रस्तुति से छत्तीसगढ़ का मान बढ़ाया है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने विद्यार्थियों से आत्मीय संवाद करते हुए उनकी यात्रा के संबंध में जानकारी ली। विद्यार्थियों ने बताया कि राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु से मिलना उनके जीवन का अविस्मरणीय अनुभव रहा। राष्ट्रपति महोदया ने उनसे सहजता और आत्मीयता के साथ बातचीत की तथा उनकी शिक्षा, रुचियों और भविष्य की आकांक्षाओं के बारे में जाना। विद्यार्थियों ने राष्ट्रपति भवन के भ्रमण और वहां बिताए क्षणों से जुड़े अपने अनुभव भी मुख्यमंत्री के साथ साझा किए।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि हमारे बच्चों में प्रतिभा और संभावनाओं की कोई कमी नहीं है। उन्हें सही अवसर, प्रोत्साहन

और मंच मिले तो वे हर क्षेत्र में छत्तीसगढ़ का नाम रोशन कर सकते हैं। ऐसे अवसर विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को बढ़ाने के साथ उनके सपनों को नई ऊंचाई देते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से पूरी लगन और मेहनत के साथ अपनी पढ़ाई जारी रखने तथा जीवन में बड़े लक्ष्य निर्धारित कर उन्हें प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करने का आह्वान किया। उल्लेखनीय है कि रक्षाबंधन

राष्ट्रपति ने CWSN विद्यार्थी नुकेश कुमार वर्मा को बांधी राखी, छात्राओं की सुवा नृत्य प्रस्तुति को

के पावन अवसर पर छत्तीसगढ़ के प्रतिभावान विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु से भेंट और संवाद का विशेष अवसर प्राप्त हुआ था।

इस अवसर पर राष्ट्रपति महोदया ने विद्यार्थियों से आत्मीयतापूर्वक बातचीत की। उन्होंने बच्चों की प्रतिभा की सराहना करते हुए उन्हें जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। राष्ट्रपति भवन में इस मुलाकात का एक अत्यंत भावुक और यादगार क्षण उस समय आया, जब राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने CWSN (Children with Special Needs) विद्यार्थी नुकेश कुमार वर्मा को स्वयं राखी बांधी। राष्ट्रपति महोदया का यह आत्मीय स्नेह नुकेश के साथ ही वहां उपस्थित विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए भी जीवनभर संजोकर रखने वाली स्मृति बन गया।इस अवसर पर छत्तीसगढ़ की समृद्ध लोक संस्कृति की सुंदर झलक भी राष्ट्रपति भवन में देखने को मिली।

बृजमोहन अग्रवाल ने फिर बढ़ाया मदद का हाथ

140 हितग्राहियों को दी 21 लाख की सहायता

रायपुर। रायपुर लोकसभा क्षेत्र के सांसद एवं वरिष्ठ भाजपा नेता बृजमोहन अग्रवाल ने एक बार फिर अपने जनसेवा के संकल्प को मजबूत करते हुए जरूरतमंदों को आर्थिक संबल प्रदान किया। गुरुवार को आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने 140 हितग्राहियों को लगभग 21 लाख रुपये की सहायता राशि के चेक वितरित किए।सांसद की इस पहल में गंभीर बीमारियों से जूझ रहे मरीजों के उपचार, मेधावी एवं जरूरतमंद विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा के साथ-साथ छत्तीसगढ़ की समृद्ध लोक एवं भक्ति परंपरा को आगे बढ़ाने वाली रामायण मंडलियों, जसगीत मंडलियों और भजन मंडलियों को भी आर्थिक सहायता दी गई। 'जनता की सेवा ही मेरा सर्वोच्च धर्म' चेक वितरण कार्यक्रम में बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि जनता की सेवा ही उनका सर्वोपरि धर्म है। उन्होंने कहा कि किसी जरूरतमंद के कठिन समय में उसके साथ खड़ा होना ही सच्ची जनसेवा है। बच्चों की शिक्षा, मरीजों के बेहतर उपचार और प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए हरसंभव सहयोग जारी रहेगा।उन्होंने कहा कि आर्थिक परेशानी किसी बच्चे की उच्च शिक्षा में बाधा न बने और गंभीर बीमारी के कारण किसी जरूरतमंद को उपचार से वंचित न होना पड़े, यही उद्देश्य सहायता राशि उपलब्ध कराने के पीछे है।लोक संस्कृति के पहरेदारों को भी मिला संबलबृजमोहन अग्रवाल ने छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति और धार्मिक परंपराओं को जीवंत रखने वाली मंडलियों को भी आर्थिक सहयोग प्रदान किया।

मोदी की फिर अपील-जरूरत न हो तो सोना नहीं खरीदें

नई दिल्ली । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश की जीडीपी ग्रोथ रेट 7.8% रहने पर देशवासियों को बधाई दी। उन्होंने मंगलवार को सोशल मीडिया पर वीडियो जारी कर कहा कि यह उपलब्धि देशवासियों की इच्छाशक्ति, मेहनत और सामूहिक ताकत का नतीजा है। पीएम ने एक बार फिर लोगों से गैर-जरूरी सोने की खरीदारी से बचने की अपील की। उन्होंने कहा, 'अगर जरूरत न हो तो सोना नहीं खरीदना चाहिए।' इससे पहले 11 मई को भी पीएम ने देशवासियों से सोना नहीं खरीदने की अपील की थी। पीएम मोदी ने कहा- देश के अंदर कुछ लोग निराशा फैलाने और 'झूठ की गूंज' के सहारे माहौल खराब करने में लगे हैं। इन सभी चुनौतियों को पार करते हुए भारत ने 7.8% की विकास दर हासिल की है। देश को यही रफ्तार बनाए रखनी होगी और आगे भी तेजी से विकास करना होगा। उन्होंने कहा, विदेश में घूमने के लिए यात्राएं करने और विदेश में शादी करने से बचना चाहिए। लोगों को मेक इन इंडिया के मंत्र के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

तीन पदाधिकारियों को मिला राज्य मंत्री का दर्जा

रायपुर। छत्तीसगढ़ शासन के सामान्य प्रशासन विभाग ने संजय अग्रवाल को छत्तीसगढ़ राज्य योग आयोग के अध्यक्ष के रूप में राज्य मंत्री का दर्जा दिया गया है। वही अंजय शुक्ला को छत्तीसगढ़ राज्य आदिवासी स्थानीय स्वास्थ्य परंपरा एवं औषधि पादप बोर्ड के उपाध्यक्ष के रूप में राज्य मंत्री का दर्जा मिला है और शरद अवस्थी को इंद्रावती बेसिन विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष के रूप में राज्य मंत्री का दर्जा प्रदान किया गया है। सरकार के इस निर्णय को निगम-मंडल और प्राधिकरण के पदाधिकारियों को दी गई महत्वपूर्ण प्रशासनिक-राजनीतिक मान्यता के तौर पर देखा जा रहा है। शासन के आदेश में स्पष्ट किया गया है कि राज्य मंत्री का दर्जा केवल

शिष्टाचार (प्रोटोकॉल) के लिए प्रदान किया गया है। संबंधित पदाधिकारियों को नियमानुसार सुविधाएं उपलब्ध कराने का उत्तरदायित्व संबंधित प्रशासनिक विभाग/आयोग का होगा। आदेश में यह भी कहा गया है कि यह सूची किसी प्रकार की वरिष्ठता या प्रोटोकॉल की स्थिति नहीं दर्शाती है। राज्य मंत्री का दर्जा आदेश जारी होने की तारीख से प्रभावशील होगा।

प्रधानमंत्री मोदी ने हमें किया था अलर्ट, लेकिन यूरोप ने नहीं सुनी'

नई दिल्ली। बेल्जियम के प्रधानमंत्री बार्ट डी. वेवर ने कहा कि यूरोप को व्यापारिक निर्भरता के जोखिमों के बारे में अचानक अहसास हुआ है। उन्होंने माना कि भारत ने पहले ही यूरोपीय देशों को इस मुद्दे पर चेतावनी दी थी, लेकिन उस चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया गया। भारत-यूरोप के बीच गहरी राणनीतिक साझेदारी की संभावनाओं पर बात करते हुए, डी वेवर ने कहा कि दोनों पक्षों के सामने एक जैसी चुनौतियां हैं, खासकर इसलिए क्योंकि आर्थिक निर्भरता का इस्तेमाल अब दबाव बनाने के लिए किया जा रहा है।

डी वेवर ने कहा कि हमारे सामने एक जैसी चुनौतियां हैं। हम उन्हीं पावर ब्लॉक्स का सामना कर रहे हैं जो एक खास दिशा में बढ़ रहे हैं। एक ऐसी दिशा जो शायद हमें पसंद नहीं है और हमें यह पसंद नहीं कि कोई अपनी मर्जी चलाए। हमें पसंद नहीं है कि निर्भरता का इस्तेमाल हमारे खिलाफ हथियार के तौर पर किए जाए। इसके बाद उन्होंने यूरोप को दी गई भारत की चेतावनियों का जिक्र किया। डी वेवर ने कहा कि आपने यह इतिहास देखा है। आपके प्रधानमंत्री ने पहले ही यूरोप को इस बारे में चेतावनी दी थी, लेकिन उन्हें नजर अंदाज कर दिया गया। उनकी बात नहीं सुनी गई। अब हम सुन रहे हैं। यूरोप नें यह अहसास शायद थोड़ी देर से हो रहा है, लेकिन हो रहा है। जब वेवर से सवाल पूछा गया कि ऐसे समय में जब वैश्विक अर्थव्यवस्था बंट रही है, यूरोप और भारत एक मजबूत रणनीतिक साझेदारी कैसे बना सकते हैं और भारत को व्यापार, निवेश, टेक्नोलॉजी और सप्लाई चेन की मजबूती के लिए यूरोप को लंबे समय के पार्टनर के तौर पर क्यों चुनना चाहिए?

मुख्यमंत्री ने राष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत किया छत्तीसगढ़ का जल संरक्षण मॉडल

बारिश की हर बूंद सहेजने में छत्तीसगढ़ देश में अग्रणी

रायपुर। बारिश की हर बूंद को सहेजने और उसे धरती के भीतर पहुंचाकर आने वाली पीढ़ियों के लिए जल सुरक्षित करने की दिशा में छत्तीसगढ़ ने देश के सामने जनभागीदारी का प्रभावी मॉडल प्रस्तुत किया है। जल शक्ति मंत्रालय के 'जल संचय जन भागीदारी' अभियान के तीसरे चरण में छत्तीसगढ़ ने देश में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। राज्य के पांच जिले भी जल संरक्षण के क्षेत्र में देश के शीर्ष 10 जिलों में स्थान बनाने में सफल रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उपस्थिति में जल शक्ति मंत्रालय के विभागीय शिखर सम्मेलन में मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने छत्तीसगढ़ में जल संरक्षण के लिए किए जा रहे नवाचारों और जनभागीदारी आधारित प्रयासों की जानकारी राष्ट्रीय मंच पर साझा की। सम्मेलन के 'कैच द रेन' सत्र में उपमुख्यमंत्री अरुण साव ने राज्य में वर्षा जल संचयन, भू-जल पुनर्भरण तथा पेयजल स्रोतों के संरक्षण के लिए किए जा रहे कार्यों की विस्तार से जानकारी दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि छत्तीसगढ़ ने जल संरक्षण को केवल शासकीय योजनाओं और जल संरचनाओं के निर्माण तक सीमित नहीं रखा है।

किसानों, ग्राम पंचायतों, जल सखियों, जल मित्रों और स्थानीय समुदायों को इससे जोड़कर इसे व्यापक जनअभियान का स्वरूप दिया गया है। वे स्वयं किसान परिवार से आते हैं और अपने गृहग्राम बगिया में हल चलाकर खेती कर चुके हैं। इसलिए खेती और ग्रामीण जीवन में पानी का महत्व उन्होंने बहुत करीब से

देखा और समझा है। किसान के लिए पानी केवल एक प्राकृतिक संसाधन नहीं, बल्कि उसकी फसल, परिवार, आजीविका और भविष्य से जुड़ा विषय है। यही कारण है कि छत्तीसगढ़ में जल संरक्षण की योजनाओं के केंद्र में किसान और गांव को रखा गया है। उन्होंने कहा कि देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में लगभग चार प्रतिशत हिस्सेदारी रखने वाला छत्तीसगढ़ 'जल संचय जन भागीदारी' अभियान में लगातार उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहा है। यह उपलब्धि केवल जल संरचनाओं की संख्या की नहीं, बल्कि जल संरक्षण के प्रति प्रदेश में विकसित हो रही सामूहिक चेतना और जनभागीदारी की भी उपलब्धि है। मुख्यमंत्री श्री साय ने सम्मेलन में कोरिया जिले से शुरू हुए '5 प्रतिशत मॉडल' का विशेष उल्लेख किया। यह मॉडल जल संरक्षण में किसानों की स्वैच्छिक भागीदारी का अभिनव उदाहरण है। इस पहल के अंतर्गत किसान अपनी कृषि भूमि का लगभग 5 प्रतिशत हिस्सा भू-जल पुनर्भरण और वर्षा जल संचयन के लिए स्वेच्छा से उपलब्ध करा रहे हैं।

छत्तीसगढ़ देश में प्रथम

जल शक्ति मंत्रालय के 'जल संचय जन भागीदारी' अभियान के तीनों चरणों में छत्तीसगढ़ ने उल्लेखनीय प्रदर्शन किया है। पहले दो चरणों में देश में दूसरा स्थान हासिल करने के बाद तीसरे चरण में राज्य ने देश में पहला स्थान प्राप्त किया है। 'जल संचय जन भागीदारी' अभियान के प्रथम चरण जेएसजेबी 1.0 में छत्तीसगढ़ में 4 लाख 5 हजार 561 जल संरचनाएं बनाई गईं। इस चरण में छत्तीसगढ़ देश में दूसरे स्थान पर रहा। दूसरे चरण JSJB 2.0 में प्रदेश में 24 लाख 7 हजार 456 जल संरचनाएं दर्ज की गईं। इनमें से 23 लाख 7 हजार 768 जल संरचनाओं का कार्य पूरा हो चुका है। इस चरण में भी छत्तीसगढ़ ने देश में दूसरा स्थान हासिल किया।

झीरम घाटी जांच आयोग पर हाईकोर्ट में सुनवाई टली

बिलासपुर। रायपुर, झीरम घाटी नक्सली घटना की दोबारा जांच के लिए गठित नए जांच आयोग के खिलाफ दायर जनहित याचिका पर हाईकोर्ट में गुरुवार को सुनवाई नहीं हो सकी। हाईकोर्ट ने भाजपा नेता एवं पूर्व प्रदेश भाजपा अध्यक्ष धरमलाल कौशिक की जनहित याचिका पर सुनवाई को दो सप्ताह के लिए आगे बढ़ा दिया है। यह मामला झीरम घाटी नक्सली हमले की जांच के लिए राज्य सरकार द्वारा गठित नए आयोग की वैधता से जुड़ा हुआ है। दरअसल, तत्कालीन भूपेश बघेल सरकार ने झीरम घाटी नक्सली घटना की जांच के लिए एक नया जांच आयोग गठित किया था। इस आयोग के गठन के खिलाफ तत्कालीन भाजपा अध्यक्ष धरमलाल कौशिक ने हाईकोर्ट में जनहित याचिका दायर की थी। याचिका में नए जांच आयोग

के गठन पर रोक लगाने की मांग की गई थी। कौशिक की ओर से तर्क दिया गया था कि झीरम घाटी घटना की जांच पहले ही एक जांच आयोग द्वारा की जा चुकी है। ऐसे में दोबारा जांच के लिए नया आयोग गठित करने की आवश्यकता नहीं है। मामले में राज्य सरकार के साथ-साथ झीरम घाटी घटना से प्रभावित परिवारों की ओर से भी हस्तक्षेप याचिका दायर की गई थी।

संक्षिप्त समाचार

ग्राम रोहरा में स्वछ भारत के अन्तर्गत नाली व गलियों में लम्बे समय से जमे गन्दगी की जेसिबी मशीन से सफाई जारी

भाटापारा। ग्राम रोहरा में पंचायत प्रतिनिधियों द्वारा गोपाल शुक्ला के नेतृत्व में स्वच्छ भारत अन्तर्गत स्वीकृत दो लाख रुपये की राशि का कार्य आरंभ किया गया । जिसमें नाली सफाई व अन्य गंदा स्थल की सफाई का कार्य जेसीबी द्वारा कराया गया । वहीं छोटे भाठा में लम्बे समय से ढके पडें बोर में डेढ एचपी का सब मर्सिबल पंप का नया मशीन लगाया गया जिससे वार्ड क्र . एक और दो में स्वच्छ पेयजल लोगो प्राप्त होने लगा है। इसी तरह मुक्ति धाम में शेड निर्माण कार्य मोक्षधाम घाट में शेड निर्माण कार्य एवं स्कुल निर्माण कार्य भी गांव में चल रहा है। उक्त कार्य में गोपाल शुक्ला, गुलाब साहू , लक्षवन्तीन सांवरा , सुरेश कुमार घितोडें , मनराखन यदु , लिलेश्वर साहू , अजित साहू, राकेश साहू ,अंगद यदु, कमलेश कौशिक, संजय जेन्ड्रा, नन्दकुमार माण्डले , कैलाश पाल, दिलहरण यादव, विनोद मिश्रा सहित समस्त ग्रामीणो का सहयोग मिल रहा है।

इन्द्र साव ने खैरा में सीसी रोड निर्माण कार्य का भूमि पूजन किया

भाटापारा। विधायक इन्द्र साव ने ग्राम पंचायत खैरा में 15 लाख रूपयें की लागत से बनने वाले सीसी रोड व नाली निर्माण कार्यो का भूमिपूजन किया । उक्त अवसर पर उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामवासियों को बेहतर बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराना उनकी पहली प्राथमिकता है। गांव के चहुमुखी विकास से ही वास्तविक विकास का पता चलता है। खैरा गांव में उक्त निर्माण कार्य के पुरा हो जाने के बाद ग्रामीणों को जल भराव एवं कीचड़ जैसे समस्या से मुक्ति मिल सकेंगी । व सुगम अवागमन का साधन प्राप्त हो सकेगा। उपरोक्त कार्यक्रम में चुन्नी , मुकेश साहू, अलधर ध्रुव , कुमारी ध्रुव ,बिसौनी ध्रुव , नितु गोस्वामी, अजय पटेल , ब्रिज बाई , विरज भाई पटेल, राधे यादव , संतोष मानिकपुरी, शत्रुहन यदु, प्रिती पटेल , हेमिन साहू, जनकराम साहू, बलराम साहू, पीलाराम सेन , छेदीलाल सेन, मनहरनलाल साहू, गंगुदास पटेल, राम पटेल, गोत्री पटेल, गणेश ध्रुव , तरूण साहू, खुबीराम साहू, डुबी साहू, हिमांशु वर्मा , कमलेश वर्मा , डोमन वर्मा , भुतेश्वर सेन , विजय यादव , ज़ेला यादव सहित बड़ी तादाद में ग्रामीण मौजुद थे।

अश्वनी शर्मा सुंदरकाण्ड पाठ समारोह में शामिल हुए

भाटापारा। पालिका अध्यक्ष अश्वनी शर्मा ने स्थानीय आरएसएस. कार्यालय में आयोजित सुंदरकाण्ड पाठ कार्यक्रम में शामिल होकर सामुहिक रूप से सुंदरकाण्ड पाठ का पठन किया। उक्त अवसर पर बड़ी तादाद में संघ के पदाधिकारी सदस्य व अन्य गणमान्य नागरिक मौजुद थे। इसके अलावा उक्त आयोजन में सुंदरकाण्ड पाठ समिति के लोग भी बड़ी तादाद में मौजुद थे।

मयूर शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भाटापारा में साइबर क्राइम जागरूकता अभियान का आयोजन

ब्यूरोचीफ संतोष साहू

भाटापारा । मयूर शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, भाटापारा में दिनांक 21 अगस्त 2026 को साइबर क्राइम जागरूकता अभियान के अंतर्गत जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि साइबर क्राइम भाटापारा के पुलिस अधिकारी श्री रितेश राय जी उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि श्री रितेश राय जी ने विद्यालय के विद्यार्थियों को साइबर अपराध के विभिन्न प्रकारों एवं उनसे बचाव के उपायों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने विशेष रूप से अनजान कॉल के माध्यम से KYC के नाम पर OTP मांगना, वीडियो कॉल द्वारा डिजिटल अरेस्ट, Instagram, WhatsApp एवं Facebook जैसे सोशल मीडिया अकाउंट को हैक करना, वेब हैकिंग, फिशिंग, मैलवेयर अटैक सहित साइबर अपराध के विभिन्न स्वरूपों के बारे में विद्यार्थियों को जागरूक किया। उन्होंने विद्यार्थियों से अपील की कि वे किसी भी अनजान व्यक्ति के साथ OTP, पासवर्ड, बैंक संबंधी जानकारी अथवा अन्य निजी जानकारी साझा न करें तथा संदिग्ध लिंक और अनजान कॉल से सावधान रहें। साइबर अपराध से संबंधित किसी भी घटना की स्थिति में तत्काल संबंधित व्यक्ति अथवा पुलिस को सूचना देने के लिए भी प्रेरित किया गया।

साइबर क्राइम विषय पर निबंध लेखन प्रतियोगिता

कार्यक्रम को और अधिक प्रभावी एवं विद्यार्थियों की सहभागिता से खास बनाने के उद्देश्य से साइबर क्राइम विषय पर निबंध लेखन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए साइबर अपराध के विभिन्न पहलुओं, उससे होने वाले नुकसान तथा बचाव के उपायों पर अपने विचार प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किए। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान निहारिका पटेल, कक्षा 12वीं, विज्ञान संकाय ने प्राप्त किया। द्वितीय स्थान पल्लवी घृतलहरे, कक्षा 12वीं, वाणिज्य संकाय ने प्राप्त किया। वहीं तृतीय स्थान पर दो विद्यार्थियों–तान्या कलवानी, कक्षा 11वीं, अंग्रेजी माध्यम तथा रोशन ध्रुव, कक्षा 12वीं, वाणिज्य संकाय–का चयन हुआ। इस प्रकार प्रतियोगिता में तृतीय स्थान के लिए दो विद्यार्थियों को संयुक्त रूप से चयनित किया गया। सभी प्रतिभागी विद्यार्थियों ने साइबर क्राइम विषय पर बहुत अच्छे ढंग से अपने विचार व्यक्त किए तथा अपनी लेखन क्षमता के साथ-साथ साइबर अपराध के प्रति जागरूकता और सजगता का परिचय दिया। प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों में साइबर सुरक्षा के प्रति समझ विकसित करना तथा उन्हें डिजिटल दुनिया में सुरक्षित एवं जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करना रहा।

नशामुक्ति की दिलाई गई शपथ

कार्यक्रम के दौरान नशा मुक्त भारत, स्वस्थ भारत एवं विकसित भारत अभियान के अंतर्गत विद्यार्थियों को नशे से दूर रहने तथा स्वस्थ एवं जागरूक समाज के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर साइबर क्राइम विभाग के अधिकारी श्री महेंद्र जोगी एवं आरक्षक श्री विजय कुमार उपस्थित रहे। विद्यालय के प्राचार्य श्री वाजपेयी सर सहित विद्यालय के अन्य सहयोगी शिक्षक–शिक्षिकाएं भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को आधुनिक तकनीक के सुरक्षित उपयोग, साइबर अपराधों से बचाव, नशामुक्त जीवन तथा स्वस्थ एवं विकसित समाज के निर्माण के प्रति जागरूक करना रहा।

मुख्यमंत्री शहरी स्लम स्वास्थ्य योजना के तहत 75 मरीजों ने लिया निशुल्क स्वास्थ्य सेवा का लाभ

बुधवार को मोबाइल मेडिकल यूनिट ने थानखम्हरिया के विभिन्न क्षेत्रों में पहुंचकर की स्वास्थ्य जांच

ब्यूरोचीफ अनिल सिंघानिया

थानखम्हरिया । मुख्यमंत्री शहरी स्लम स्वास्थ्य योजना के तहत संचालित मोबाइल मेडिकल यूनिट के माध्यम से नगर एवं स्लम बस्तियों में रहने वाले नागरिकों को उनके घर के पास ही निशुल्क स्वास्थ्य जांच, उपचार एवं दवाइयों की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। इसी क्रम में बुधवार को थानखम्हरिया में आयोजित स्वास्थ्य शिविर में 75 मरीजों ने निशुल्क स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ लिया, जबकि 15 मरीजों के विभिन्न स्वास्थ्य परीक्षण किए गए। मोबाइल मेडिकल यूनिट द्वारा मरीजों की सामान्य स्वास्थ्य जांच के साथ ही ब्लड प्रेशर एवं शुगर सहित आवश्यक परीक्षण किए गए। जांच के दौरान कुछ मरीजों में उच्च रक्तचाप एवं शुगर से संबंधित समस्या पाई गई। चिन्हित मरीजों को आवश्यक उपचार, दवाइयां एवं चिकित्सकीय परामर्श प्रदान किया गया।

मोबाइल मेडिकल यूनिट सप्ताह में दो दिन बुधवार एवं शनिवार को नगर में पहुंचती है। इसका संचालन सुबह 8 बजे से दोपहर 3 बजे तक किया जाता है। अलग-अलग वार्डों में निर्धारित दिनों के अनुसार पहुंचकर लोगों को स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई जाती हैं।

योजना के माध्यम से नागरिकों को समय पर स्वास्थ्य जांच एवं उपचार मिलने से विभिन्न बीमारियों की प्रारंभिक स्तर पर पहचान और नियंत्रण में मदद मिल रही है। विशेष रूप से जरूरतमंद परिवारों, महिलाओं, बच्चों एवं बुजुर्गों के लिए यह सेवा काफी उपयोगी साबित हो रही है। बुधवार को आयोजित शिविर में डॉ. प्रमोद, फार्मासिस्ट भुवन साहू, नर्स चंद्रकिरण निषाद, लैब टेक्नीशियन प्रफुल्ल कुमार तथा वाहन चालक राहुल नेताम ने अपनी सेवाएं प्रदान कीं।

सेवानिवृत्त अधिकारी/कर्मचारियों को सेवानिवृत्ति दिवस पर ही मिला पेंशन भुगतान आदेश,कलेक्टर ने किया सम्मान

बेमेतरा - जिला प्रशासन बेमेतरा द्वारा एक अभिनव पहल करते हुए सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारी-कर्मचारियों को सेवानिवृत्ति तिथि पर ही पेंशन भुगतान आदेश प्रदान कर सम्मानित किया गया।

कलेक्टर सुश्री प्रतिष्ठा ममगई द्वारा सम्मान समारोह में सेवानिवृत्त कर्मचारियों को पेंशन भुगतान आदेश पत्र, श्रीफल एवं शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया और उनके दीर्घकालीन सेवाओं के लिए आभार व्यक्त किया।

सम्मानित होने वाले सेवानिवृत्त कर्मचारी - श्री कुलेश्वर प्रसाद वर्मा,श्रीमती जंत्री बाई यादव,श्री राजेश कुमार ताम्रकार,श्री चन्द्रप्रकाश पवार, श्री श्रवण कुमार महोबिया एवं श्री गौकरण राम साहू है

इस अवसर पर कलेक्टर ने कहा कि शासकीय सेवकों ने अपने सेवाकाल में निष्ठा और ईमानदारी से कार्य किया है। सेवानिवृत्ति के दिन ही पेंशन भुगतान आदेश प्रदान करने से उन्हें पेंशन संबंधी कार्यों के लिए भटकना नहीं पड़ेगा और यह जिला प्रशासन की कर्मचारी हितैषी पहल है।

सिंधी समाज की महिलाओं ने ट्रिजणी पर्व(कजरी तीज) धूमधाम से मनाया

भाटापारा। भाद्रपद माह में कृष्ण पक्ष तृतीया सोमवार को कजरी तीज से त्योहारों की धूम शुरू हो गई,पति के अच्छे स्वास्थ्य,दीर्धायु जीवन के लिए सिंधी समाज भाटापारा की महिलाओं ने सोमवार को ट्रिजणी पर्व मनाया।प्रातः4 बजे उठकर (असुर कर)घरों में पूजा कर उपवास प्रांरम्भ किया,व्रती महिलाओं ने रविवार को ही अपने हाथों में मेहंदी लगवाई व सोमवार को सोलह श्रृंगार कर वैवाहिक जीवन में सुख शांती व समृद्धि एवं पति की दीर्धायु के लिए व्रत रखा।इस व्रत को कुंआरी कन्याओं ने भी रखा,मान्यता है कि जिन कन्याओं की शादी नहीं हुई अथवा विलम्ब हो रहा है तो उन्हें जल्द ही सुयोग्य वर की प्राप्ति होती है।व्रति महिलाएँ दोपहर को समाज के पुरोहित के घर जाकर माता गौरी को झूले में झूलाकर,सांयकाल ब्राह्मण से कथा सुनती हैं।ततपश्चात रात्रि में चांद को देखकर, जल चढ़ाकर पति के हाथों अन्न व जल ग्रहण कर व्रत का समापन करती हैं।

बेमेतरा में बिजली व्यवस्था को बड़ी मजबूती, 19 करोड़ की लागत से बना 132/33 केवी उपकेंद्र शुरू

80 एमवीए की ट्रांसफॉर्मेशन कैपेसिटी से क्षेत्र की विद्युत आपूर्ति होगी मजबूत

बेमेतरा। छत्तीसगढ़ स्टेट पावर ट्रांसमिशन कंपनी ने प्रदेश की पारेषण व्यवस्था को सुदृढ़ करने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। बेमेतरा जिले के बेतर (दाढ़ी) में नवनिर्मित 132/33 केवी उपकेंद्र का आज प्रबंध निदेशक श्री राजेश कुमार शुक्ला ने ऊर्जीकरण किया। उपकेंद्र में स्थापित 40-40 एमवीए क्षमता के दो पावर ट्रांसफार्मरों को भी सफलतापूर्वक ऊर्जीकृत किया गया। दोनों ट्रांसफार्मरों के ऊर्जीकरण से उपकेंद्र में कुल 80 एमवीए की ट्रांसफॉर्मेशन कैपेसिटी उपलब्ध हुई है।

नए उपकेंद्र के निर्माण से बेमेतरा जिले के 72 तथा कवर्धा के 25 गांवों में विद्युत आपूर्ति व्यवस्था को मजबूती मिलेगी। बढ़ती विद्युत मांग के अनुरूप विद्युत भार का बेहतर प्रबंधन संभव होगा तथा क्षेत्र में घरेलू, कृषि एवं अन्य उपभोक्ताओं को अधिक विश्वसनीय और गुणवत्तापूर्ण विद्युत आपूर्ति उपलब्ध कराने में सहायता मिलेगी। नए उपकेंद्र की कुल परियोजना लागत लगभग 19 करोड़ रुपये है।

इस उपकेंद्र को विद्युत आपूर्ति से जोड़ने के लिए 220 केवी उपकेंद्र गेन्दपुर से 132 केवी उपकेंद्र जाने वाली पारेषण लाइन को LILO (Loop In Loop Out) किया गया है। इसके लिए लगभग 8.8 करोड़ रुपये की लागत से 5 किलोमीटर नई पारेषण लाइन का निर्माण किया गया। इस व्यवस्था से नए उपकेंद्र को पारेषण नेटवर्क से जोड़ा गया है, जिससे क्षेत्र में विद्युत आपूर्ति की विश्वसनीयता एवं पारेषण क्षमता में वृद्धि होगी।

प्रबंध निदेशक श्री राजेश कुमार शुक्ला ने उपकेंद्र के ऊर्जीकरण पर अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देते हुए कहा कि प्रदेश में बढ़ती विद्युत मांग को देखते हुए पारेषण नेटवर्क का लगातार विस्तार किया जा रहा है। नए उपकेंद्रों एवं पारेषण लाइनों के निर्माण से न केवल वर्तमान विद्युत आवश्यकताओं की पूर्ति में सुविधा होगी, बल्कि भविष्य में बढ़ने वाले विद्युत भार के लिए भी आवश्यक अधोसंरचना तैयार होगी। उन्होंने कहा कि बेमेतरा जिले में स्थापित यह नया उपकेंद्र क्षेत्र की विद्युत आपूर्ति व्यवस्था को और अधिक सक्षम एवं विश्वसनीय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

इस अवसर पर उपकेंद्र परिसर में वृक्षारोपण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। प्रबंध निदेशक सहित उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने परिसर में पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इस अवसर पर कार्यपालक निदेशक श्री एम. एस. चौहान, श्री संजय पटेल, श्री के. एस. मनोठिया, श्री वीरेंद्र दीक्षित एवं श्री शिरीष शैलेट, मुख्य अभियंता श्री अब्राहम वर्गीस, श्री संजय तिवारी एवं श्री प्रसन्ना गोसावी, अतिरिक्त मुख्य अभियंता श्री राजेश तिवारी, अधीक्षण अभियंता श्री आई. एस. कंवर, श्री करुणेश यादव, श्री सुनील भूआर्य, श्री धनेश देवांगन, श्री तरुण ठाकुर, श्री वि₹ म मंधान एवं श्री ललित देवांगन सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

भावी संकट की पूर्व चेतावनी है नेपाल त्रासदी

आज संवाद या विचार का विषय यह नहीं रह गया है कि नेपाल त्रासदी में कितने लोगों ने अपनी जान गंवाई है या कितनी जन-धन हानि हुई है अपितु यह हो जाता है कि इस तरह की त्रासदी से निपटने के लिए हम कहां तक तैयार है। सवाल यह भी है कि ऐसे हालात क्यों होते जा रहे हैं।

एक बात साफ हो जानी चाहिए कि दुनिया के देशों के लिए नेपाल त्रासदी को हल्के में लेना बड़ी भूल होगी। 2020 की कनाड़ा की रॉक स्लाइड और 2023 की सिक्किम में साउथ ल्होनक झील की ग्लेशियल फटने की घटना हमारे सामने हैं। यह कोई पहली या अंतिम घटनाएं नहीं हैं अपितु देखा जाएं तो यह समय रहते प्रयास नहीं किये गये तो ऐसी घटनाओं की आवृति जल्दी जल्दी और अतिविनाशकारी होगी, इससे नकारा नहीं जा सकता। जलवायु परिवर्तन के कारण पिछले सालों में जिस तरह से प्रकृति का विकराल रुप देखने को मिल रहा है वह चाहे तूफानों के रुप में हो, चाहे जंगलों में लगती आग के कारण हो, ग्लेशियरों के पिघलने की हो, ग्लेशियलों के फटने की हो, भूकंपों की हो, बैमौसम आंधी बरसात की हो, अतिवृष्टि या अनावृष्टि की हो, मौसम चक्र में भले ही आंशिक परिवर्तन की हो या समुद्री तूफानों की बढती फ्रिक्वेंसी की हो बेहद गंभीर हो जाती है। वैज्ञानिकों व विशेषज्ञों की लगातार चेतावनी को नजरअंदाज करने का ही परिणाम है कि नेपाल जैसी त्रासदियां आम होती जा रही है। यह केवल नेपाल या इससे जुड़े क्षेत्र के लिए ही गंभीर हालात नहीं हैं अपितु अमेरिका, चीन, भारत सहित दुनिया के दस देश नेपाल जैसी त्रासदी के मुहाने पर खड़े हैं। ग्लेशियल के फटने या यों कहें किग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड यानी कि ग्लोफ जैसे हालात कभी भी इनके दायरें में आने वाले देशों में हो सकते हैं। यह भी सही है कि अभी तक भारत-नेपाल ही नहीं दुनिया के इस दायरें में आने वाला कोई भी देश इन आपदाओं से निपटने में पूरी तरह सक्षम नहीं हो सके हैं। जानकारों की मानें तो भारत, चीन, पाकिस्तान, पेरु के एक करोड़ 50 लाख लोग इनके दायरें में सीधे सीधे आ रहे हैं। यह वह लोग है जो इन ग्लेशियलों के एक किलोमीटर से 10 किलोमीटर के दायरें में रह रहे हैं। आज ग्लोफ खतरें के दायरें में भारत, पाकिस्तान, कनाड़ा, पेरु, अमेरिका, चिली, इटली, नेपाल और कोलंबिया आए हुए हैं।

उत्तराखंड त्रासदी हमारे सामने हैं और उस त्रासदी के परिणाम सामने होने के बावजूद लगभग साल दर साल भूस्खलन के मामले हर सीजन में सामने आ रहे हैं। यह साफ हो जाना चाहिए कि प्रकृति से एक सीमा से अधिक खिलवाड़ किया जाता है तो विकृति का सामना हमें करना ही पड़ेगा। जीवनदायी यही प्रकृति अपने विकराल रुप में पलटवार करती है। ऐसे में समय के साथ सबक लेना जरुरी हो जाता है। आज सारी दुनिया में पर्यावरण संरक्षण की बात तो की जाती है पर उस पर अमल पूरी तरह से हो नहीं पा रहा है। विशेषज्ञों की माने तो हालात यही रहे तो सदी के अंत तक समुद्र का जलस्तर दो मीटर तक बढ़ सकता है। तो दूसरी और अभी से समुद्र तटीय कई शहर डूबने की जद में आने की चेतावनियां दी जा रही है।

नेपाल की हालिया त्रासदी का कारण ग्लेशियल का फटना माना जा रहा है। दरअसल ग्लेशियर और ग्लेशियल में हमें भेद करके चलना होगा। ग्लेशियर भौगोलिक संरचना होती है। यह पहाड़ों और ध्रुवों पर लंबे समय से जमा बर्फ खण्ड होते हैं। यह अपने गुरुत्वाकर्षण के कारण जमे रहते हैं पर जलवायु परिवर्तन और तापमान के बढने के कारण आज बड़ी मात्रा में ग्लेशियर के पिघलने की गति तेज होती जा रही है। दरअसल ग्लेशियरों के बड़े खण्डों के पिघल कर गिरने से ग्लेशियल झील बनती हैं। ग्लेशियल झील बन जाती है इसे हिमनदी झील भी कह सकते हैं। नेपाल की हालिया त्रासदी ग्लेशियल झील के फटने के कारण ही हुई है। वैज्ञानिकों की माने तो ग्लेशियलों के निर्माण की गति में काफी तेजी आई है। यदि हम हिमालय क्षेत्र की ही बात करें तो सतलुज बेसिन में 2019 में 560 ग्लेशियल झीलें थी जो चार साल यानी की 2023 तक 1048 हो गई हैं। नेपाल त्रासदी ग्लेशियल लेक आदटबर्स्ट फ्लड यानी की ग्लोफ का परिणाम है। साधारण शब्दों में कहा जाएं तो यह ग्लेशियल झील के फटने का परिणाम है। ऐसा नहीं है कि वैज्ञानिक इन हालातों पर नजर नहीं रख रहे हो बल्कि देखा जाएं तो लीड्स विश्वविद्यालय के ग्लेशियल फ्लडिंग के विशेषज्ञ डॉ. जानाथन कारीविक पहले ही चेता चुके हैं। हमारे देश के ही राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण एनडीएमए के विशेषज्ञों ने नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल एनजीटी को रिपोर्ट प्रस्तुत कर हालात से रुबरु कराने के साथ ही ठोस सुझाव भी दिए हैं। दरअसल एक सीमा से अधिक प्रकृति से छेड़छाड़ का ही परिणाम इस तरह की त्रासदियां होती हैं। आज लाख चेतानें के बावजूद सतलुज बेसिन में बांधों के साथ साथ विद्युत परियोजनाओं सहित विकास परियोजनाओं का दखल बढ़ा है। एक सीमा से अधिक मानवीय दखल बढ़ी है। इससे तापमान में स्वाभाविक रुप से बढ़ोतरी होने के साथ ही अपशिष्ट भी फैल रहा है। दरअसल प्रकृति से प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रुप से छेडछाड़ बढ़ रही है। एनडीएमए ने साफ साफ कहा है कि सतलुज बेसिन में नए निर्माण कार्यां या नई परियोजनाओं की स्वीकृति से पहले उनके परिणामों का भली प्रकार से अध्ययन और विश्लेषण किया जाएं। परिणामों का आंकलन कर गुणावगुण के आधार पर निर्णय लिए जाए। पर्यावरणीय परिणामों को देखकर ही कोई निर्णय लिया जाएं। यह भी देखा जाएं कि ऐसे स्थानों में मानवीय दखल को एक सीमित दायरें तक ही रखा जाएं।

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

नक्सलमुक्त क्षेत्रों में शिक्षा की नई भोर

छत्तीसगढ़ में नक्सलमुक्त क्षेत्रों में स्कूलों में बजने लगी घंटी

धनंजय राठौर
संयुक्त संचालक, जनसंपर्क

छत्तीसगढ़ के पूर्व नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में दो दशकों के लंबे इंतजार के बाद स्कूलों में घंटियां बजने लगी हैं, जो इस शिक्षक दिवस पर बस्तर और उसके आस-पास के क्षेत्रों के लिए एक ऐतिहासिक और भावुक बदलाव का प्रतीक है। जहाँ कभी बारूद की गंध और बंदूक की आवाजें हुआ करती थीं, वहाँ अब बच्चे राष्ट्रगान गा रहे हैं।

5 सितंबर को देशभर में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती पर 'शिक्षक दिवस' की धूमधाम रहेगी। इस पावन अवसर पर छत्तीसगढ़ का बस्तर और अन्य दूरस्थ अंचल एक नई उम्मीद के साथ मुस्कुरा रहा है। कभी बंदूक के साए और नक्सली खौफ के कारण दशक भर से बंद पड़े स्कूल आज फिर से गुलजार हो चुके हैं। दूर-दराज के गांवों में जब वर्षों बाद फिर से स्कूल की घंटी बजती है, तो वह केवल पढ़ाई की शुरुआत नहीं होती, बल्कि उस क्षेत्र में लौटते लोकतंत्र, शांति और सुरक्षा की गूंज होती है।

बंद पड़े स्कूल फिर से हुए संचालित

छत्तीसगढ़ सरकार की पुनर्वास, सुरक्षा और जन कल्याणकारी नीतियों ('नियद नेल्ला नार' जैसी योजनाओं) के प्रभाव से दक्षिण बस्तर के सुदूर नक्सल प्रभावित इलाकों में अभूतपूर्व बदलाव देखने को मिल रहा है। बीजापुर, सुकमा,

दंतेवाड़ा और नारायणपुर जैसे जिलों में लगभग दो से ढाई दशकों से बंद पड़े 600 से अधिक प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों को जिला प्रशासन और पुलिस बल के सहयोग से दोबारा खोल दिया गया है। जो इमारतें कभी नक्सलियों द्वारा ध्वस्त कर दी गई थीं या सुरक्षा बलों के कैंप के लिए इस्तेमाल होती थीं, उन्हें फिर से संवारकर बाल-सुलभ रूप दिया गया है।

शिक्षकों का अदम्य साहस और समर्पण

नक्सलमुक्त होते क्षेत्रों में शिक्षा की लौ जलाने का वास्तविक श्रेय उन स्थानीय शिक्षकों को जाता है, जिन्होंने विपरीत और भयावह परिस्थितियों के बावजूद अपना कर्तव्य नहीं छोड़ा।

स्थानीय भाषा में अध्यापन- दूरस्थ वनांचल में नियुक्त शिक्षक न केवल बच्चों को बुनियादी अक्षर ज्ञान दे रहे हैं, बल्कि गोंडी, हलबी और डोरली जैसी स्थानीय बोलियों में संवाद कर बच्चों का स्कूल से जुड़ाव मजबूत कर रहे हैं।

समुदाय से संवाद- शिक्षकों ने ग्रामीणों और नक्सलियों के डर से सहमे अभिभावकों के बीच जाकर उनका विश्वास जीता, जिससे आज सैकड़ों बच्चे वापस ब्लैकबोर्ड और किताबों से जुड़ चुके हैं।

तकनीक और नवाचार से जुड़ रहा बस्तर का बचपन

बस्तर संभाग के बीजापुर (जैसे पीड़िया, गंपूर, तमोड़ी गांव) और सुकमा के कई अंदरूनी इलाकों में सालों से बंद पड़े स्कूलों को दोबारा खोला गया है। नक्सलियों द्वारा जिन पक्के स्कूल भवनों को आईईडी से उड़ा दिया गया था, वहाँ ग्रामीणों ने प्रशासन के साथ मिलकर अस्थायी बांस और तिरपाल की झोपड़ियां (छप्पर) तैयार की हैं ताकि बच्चों की पढ़ाई न रुके। स्थानीय भाषाओं (जैसे गोंडी, हल्बी) की चुनौती से निपटने और बच्चों में विश्वास जगाने के लिए स्थानीय शिक्षित युवाओं को शिक्षा दूत के रूप में नियुक्त किया गया है, जो इस शिक्षक दिवस के असली नायक हैं। पुनः संचालित हो रहे स्कूलों में अब केवल पुरानी लीक पर पढ़ाई नहीं हो रही है। राज्य शासन द्वारा इन स्कूलों में आधुनिक सुविधाएं सुनिश्चित की जा रही हैं

स्मार्ट क्लासेस और टैबलेट- कई वनांचल स्कूलों में डिजिटल कंटेंट और टैबलेट के माध्यम से बच्चों को पढ़ाया जा रहा है।

खेलकूद और न्योता भोज- स्कूलों में मध्याह्न भोजन (न्योता भोजन) के साथ-साथ खेल सामग्री उपलब्ध कराई गई है, जिससे बच्चों की उपस्थिति में भारी उछाल आया है।

सुरक्षित माहौल- नियद नेल्ला नार (आपका अच्छा गांव) योजना के तहत कैंपों के आसपास सुरक्षा का दायरा बढ़ने से शिक्षक बिना किसी खौफ के रोजाना स्कूल पहुंच रहे हैं।

शिक्षक दिवस पर संदेश

छत्तीसगढ़ में इस बार का शिक्षक दिवस उन शिक्षकों को समर्पित है जो राज्य के सबसे कठिन और दुर्गम क्षेत्रों में 'शिक्षादूत' बनकर कार्य कर रहे हैं। बंदूक की आवाज को दबाकर जब कलम और किताब की ताकत आगे बढ़ती है, तो समाज की नई तस्वीर बनती है। छत्तीसगढ़ के नक्सलमुक्त इलाकों मं। गूंजती स्कूलों की घंटी इस बात का सबसे बड़ा सबूत है कि शिक्षा ही बदलाव और शांति की सबसे मजबूत नींव है।

छत्तीसगढ़ की लोक परंपरा में समता और सहभागिता का प्रतीक कमरछठ

छत्तीसगढ़ में मनाया जाने वाला कमरछठ तिहार केवल संतान के मंगल की कामना का व्रत नहीं है। यह सामाजिक समरसता का भी एक जीवंत उदाहरण है। हलषष्ठी, हलछठ, खमरछठ अथवा कमरछठ के नाम से पहचाना जाने वाला यह पर्व भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की षष्ठी तिथि को मनाया जाता है। संतान की दीर्घायु और सुखी जीवन की कामना रखकर माताएं इस व्रत को रखती हैं। इस पर्व की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसे हर वर्ग और हर जाति के लोग समान भाव से मनाते हैं। न कोई ऊंच नीच का भेद, न कोई सामाजिक विभाजन, बस एक साझा आस्था और एक साझा उत्सव। यही भावना इस लोकपर्व को सामाजिक समरसता का प्रतीक बनाती है। इस व्रत की पौराणिक कथा देवकी और वसुदेव से जुड़ी है। कंस के अत्याचार से देवकी के छह पुत्र एक एक कर कारागार में मारे गए थे। सातवीं संतान के जन्म से पहले देवर्षि नारद ने देवकी को हलषष्ठी देवी का व्रत रखने की सलाह दी, और इस व्रत के प्रभाव से ही बलराम तथा आगे चलकर कृष्ण की रक्षा संभव हो सकी। यह कथा केवल एक राजपरिवार की नहीं रह जाती, बल्कि लोकजीवन में यह हर मां की कथा बन जाती है। राजमहल की देवकी और गांव के आंगन में व्रत रखने वाली साधारण मां, दोनों एक ही आस्था और एक ही भावना से जुड़ जाती हैं। यही पौराणिक कथा का वह सूत्र है, जो सामाजिक स्तर की भिन्नता को पीछे छोड़कर सबको एक समान आस्था के धागे में पिरो देता है। व्रत के दिन माताएं सुबह महुआ पेड़ की डाली से दातून करती हैं, स्नान करती हैं और भैंस के दूध की चाय पीकर व्रत धारण करती हैं। यह प्रारंभिक विधि हर घर में लगभग एक समान रहती है, चाहे वह घर बड़ा हो या छोटा। पूजन सामग्री में पसहर चावल, महुआ के पत्ते, धान की लाई तथा भैंस का दूध दही घी रखा जाता है, और पूजन के बाद संतान की कमर के समीप पोता स्पर्श कराकर आंचल से पोंछा जाता है, जिसे रक्षा कवच का प्रतीक माना जाता है। कमरछठ के दिन घर के आंगन, मंदिर देवालय अथवा गांव के चौपाल में बनावटी तालाब बनाया जाता है, जिसे सगरी कहा जाता है। कई स्थानों पर पूरे पारा अथवा मोहल्ले की महिलाएं मिलकर एक ही सगरी पर पूजन करती हैं। इसके किनारे बेर, पलाश और गूलर की टहनियां तथा कांसी के फूल सजाए जाते हैं, और सामने हलषष्ठी देवी की मूर्ति स्थापित कर कथा सुनी जाती है। यह कथा सुनने के लिए जब आसपास की सभी स्त्रियां एक स्थान पर एकत्रित होती हैं, तब

उम्र, परिवार और आर्थिक स्थिति का भेद स्वाभाविक रूप से पीछे छूट जाता है। कोई संपन्न घर की हो या साधारण परिवार की, सगरी के पास सभी एक साथ बैठती हैं, एक ही कथा सुनती हैं और एक दूसरे के सुख दुख की सहभागी बनती हैं। यह सामूहिकता ही इस पर्व की सबसे बड़ी सामाजिक शक्ति है। कमरछठ पर्व की एक और उल्लेखनीय बात यह है कि इसमें उपयोग होने वाली लगभग सभी वस्तुएं गांव में ही सहज उपलब्ध होती हैं। पसहर चावल, महुआ के पत्ते, धान की लाई, भैंस का दूध दही घी, मुनगा कद्दू सेमी तोरई करेला और मिर्च जैसी छह प्रकार की भाजी, ये सब किसी बाजार की महंगी वस्तुएं नहीं, बल्कि गांव के खेत, बाड़ी और पेड़ों से मिलने वाली साधारण उपज हैं। इसका सीधा अर्थ यह है कि यह पर्व किसी की आर्थिक सामर्थ्य पर निर्भर नहीं करता। एक संपन्न परिवार और एक साधारण परिवार, दोनों के लिए पूजन सामग्री लगभग समान होती है, और दोनों समान श्रद्धा के साथ यह व्रत पूर्ण कर पाते हैं। यह व्रत मुख्यतः मौखिक परंपरा के माध्यम से आगे बढ़ता है। गांव की वरिष्ठ महिलाएं युवा पीढ़ी को हलषष्ठी की कथा सुनाती हैं, पूजन विधि सिखाती हैं और पसहर, छह भाजी तथा अन्य सामग्री की पहचान कराती हैं। इस प्रक्रिया में केवल धार्मिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि सामाजिक मूल्य भी हस्तांतरित होते हैं। बच्चों को भौंरा, बाटी और गेड़ी जैसे परंपरागत खिलौनों के साथ जोड़ा जाता है, जिससे सामूहिक खेल और सहजीवन की भावना बचपन से ही उनके भीतर विकसित होती है। इस तरह कमरछठ एक ऐसा सेतु बन जाता है, जो बुजुर्गों की स्मृति को नई पीढ़ी के अनुभव से जोड़ता है और सामाजिक निरंतरता बनाए रखता है।

सामाजिक समरसता का यह भाव प्रकृति के प्रति साझा कृतज्ञता से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। पूरा गांव एक साथ मिलकर खेत, जल, वनस्पति और पशुधन के प्रति आभार व्यक्त करता है। हल से जोती भूमि के अन्न का त्याग, महुआ और कांसी जैसी वनस्पतियों का सम्मान, तथा भैंस के दूध दही घी का उपयोग, ये सब मिलकर यह दर्शाते हैं कि पूरे समुदाय की समृद्धि एक साझा प्राकृतिक संसाधन पर निर्भर है। जब पूरा गांव एक ही सोच और एक ही परंपरा के साथ इस निर्भरता को स्वीकार करता है, तब सामाजिक समरसता और पारिस्थितिक चेतना एक दूसरे को मजबूत करती हैं। यह समझ किसी एक जाति या वर्ग की संपत्ति नहीं, बल्कि संपूर्ण समुदाय की साझी विरासत बन जाती है। आज के समय में जब सामाजिक विभाजन, आर्थिक असमानता और सांस्कृतिक दूरियां बढ़ती जा रही हैं, तब कमरछठ जैसे लोकपर्व एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। यह पर्व बताता है कि सामाजिक समरसता के लिए बड़े आयोजनों नहीं होती, बल्कि एक साझा सगरी, साझा कथा और साझा प्रसाद भी समाज को जोड़ने के लिए पर्याप्त हो सकते हैं। शहरी क्षेत्रों में जहां सामुदायिक जीवन सिमटता जा रहा है, वहां भी कमरछठ के अवसर पर मोहल्लों में सामूहिक आयोजन होते देखे जा सकते हैं, जो इस परंपरा की प्रासंगिकता को आज भी सिद्ध करते हैं।

आचार्य ललित मुनि
लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं लोक संस्कृति के अध्येता हैं

महतारी वंदन से आरभ हुआ सफ़र- ड्रोन दीदी, ई-रिक्शा दीदी और लखपति दीदी बन गढ़ रही आत्मनिर्भरता की राह

विष्णु देव की सरकार में महिला सशक्तिकरण को नई उड़ान

तेजबहादुर सिंह भुवाल
सहायक जनसंपर्क अधिकारी

छत्तीसगढ़ में महिला सशक्तिकरण अब केवल एक नारा नहीं, बल्कि महिलाओं के जीवन में दिखाई देने वाला बदलाव बन रहा है। विष्णु देव साय की सरकार महिलाओं को आर्थिक सुरक्षा देने के साथ-साथ उन्हें रोजगार, तकनीक, उद्यमिता और आत्मनिर्भरता से जोड़ने की दिशा में लगातार काम कर रही है। इसी कड़ी में महतारी वंदन योजना की 31वीं किस्त जारी कर प्रदेश की महिलाओं को रक्षाबंधन के पूर्व राखी का विशेष उपहार दिया गया है। यह पहल महिलाओं के लिए आर्थिक संबल के साथ उस विश्वास को भी मजबूत करती है कि परिवार और समाज के विकास में महिलाओं की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है।

महतारी वंदन योजना- आर्थिक संबल का आधार

महतारी वंदन योजना ने प्रदेश की पात्र महिलाओं के जीवन में आर्थिक सुरक्षा का एक नया आधार तैयार किया है। नियमित आर्थिक सहायता से महिलाएं अपनी व्यक्तिगत जरूरतों को पूरा करने के साथ परिवार की आवश्यकताओं में भी योगदान दे पा रही हैं। रक्षाबंधन के अवसर पर 31वीं किस्त का उपहार महिलाओं के प्रति सरकार की संवेदनशीलता और महिला सशक्तिकरण के संकल्प को दर्शाता है। आर्थिक सहायता का यह ₹ म महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ाने और उन्हें आर्थिक निर्णयों में अधिक सक्षम बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण है।

लखपति दीदी- कमाई के साथ बढ़ता आत्मविश्वास

राज्य सरकार महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने में लखपति दीदी की योजना भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। स्व-सहायता समूहों से जुड़ी महिलाएं कृषि, पशुपालन, खाद्य प्रसंस्करण, हस्तशिल्प, छोटे व्यवसाय और अन्य आयमूलक गतिविधियों के माध्यम से अपनी आमदनी बढ़ाने की दिशा में आगे बढ़ रही हैं। जब एक महिला अपने पैरों पर खड़ी होती है, तो उसका आत्मविश्वास बढ़ता है और परिवार के आर्थिक निर्णयों में उसकी भागीदारी भी मजबूत होती है।

ड्रोन दीदी- आसमान छूते सपने

आज छत्तीसगढ़ की महिलाएं आधुनिक तकनीक के क्षेत्र में भी कदम बढ़ा रही हैं। ड्रोन दीदी जैसी पहल ग्रामीण महिलाओं को नई तकनीक से जोड़ने और कृषि क्षेत्र में सेवाओं के माध्यम से आय के अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में

महत्वपूर्ण है, जो महिलाएं कभी खेतों में परंपरागत तरीके से काम करती थीं, वे अब तकनीक का प्रशिक्षण लेकर ड्रोन संचालन जैसी आधुनिक गतिविधियों से जुड़ रही हैं। यह बदलाव महिला सशक्तिकरण की बदलती तस्वीर को सामने लाता है। इन महिलाओं के देखकर अन्य महिलाएं भी प्रेरित होकर प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है।

ई-रिक्शा दीदी- रोजगार की नई राह

महिलाओं को पारंपरिक रोजगार से आगे बढ़ाकर नए क्षेत्रों में अवसर देने की दिशा में ई-रिक्शा दीदी जैसी पहल भी उल्लेखनीय है। ई-रिक्शा के माध्यम से महिलाएं परिवहन क्षेत्र में रोजगार का नया अवसर प्राप्त कर सकती हैं और अपनी आय का साधन विकसित कर सकती हैं। यह पहल महिला को केवल रोजगार नहीं देती, बल्कि उसे स्वतंत्रता, आत्मविश्वास और सम्मान के साथ आगे बढ़ने का अवसर भी देती है।

स्व-सहायता समूहों से मजबूत हो रही महिलाओं की भागीदारी

महिला सशक्तिकरण की इस यात्रा में स्व-सहायता समूह महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। समूहों के माध्यम से महिलाएं बचत, प्रशिक्षण, ऋण, उत्पादन और बाजार से जुड़कर आर्थिक गतिविधियों को आगे बढ़ा रही हैं। आज महिला केवल किसी योजना की लाभार्थी नहीं, बल्कि परिवार की अर्थव्यवस्था, गांव की अर्थव्यवस्था और प्रदेश के विकास की सक्रिय भागीदार बनने की ओर बढ़ रही है।

सहायता से आत्मनिर्भरता तक

विष्णु देव साय सरकार की महिला-केंद्रित पहलों को एक साथ देखें तो इनका उद्देश्य केवल आर्थिक सहायता देना नहीं, बल्कि महिलाओं को आर्थिक रूप से सक्षम और आत्मनिर्भर बनाना दिखाई देता है।

महतारी वंदन योजना आर्थिक संबल देती है,
ड्रोन दीदी तकनीक से जोड़ती है,
लखपति दीदी आय बढ़ाने का अवसर देती है,
और ई-रिक्शा दीदी रोजगार की नई राह खोलती है।

इन पहलों से महिला सशक्तिकरण का एक व्यापक स्वरूप सामने आता हैकृजहां महिला सहायता प्राप्त करने वाली नहीं, बल्कि अपने परिवार और समाज के विकास की नेतृत्वकर्ता बन रही है। रक्षाबंधन के अवसर पर महतारी वंदन योजना की 31वीं किस्त का उपहार इसी विश्वास को और मजबूत करता है कि प्रदेश की आधी आबादी को मजबूत किए बिना छत्तीसगढ़ के समग्र विकास की कल्पना पूरी नहीं हो सकती।

महिला मजबूत होगी, परिवार मजबूत होगा।

परिवार मजबूत होगा, तो छत्तीसगढ़ और मजबूत होगा।

महतारी सदन: गांवों में महिलाओं के लिए सशक्त मंच

प्रदेश में महिला सशक्तिकरण को गांव-गांव तक पहुंचाने की दिशा में महतारी सदन एक महत्वपूर्ण पहल है। इसका उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को एक ऐसा स्थान उपलब्ध कराना है, जहां वे एकजुट होकर अपने सामाजिक, आर्थिक और सामुदायिक विकास से जुड़े कार्यों को आगे बढ़ा सकें। महतारी सदन महिलाओं के लिए केवल एक भवन नहीं, बल्कि संगठन, संवाद, प्रशिक्षण और आत्मनिर्भरता का केंद्र बनने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। यहां महिलाएं स्व-सहायता समूहों की गतिविधियों, प्रशिक्षण, आजीविका और विभिन्न योजनाओं से जुड़ी गतिविधियों को बेहतर तरीके से संचालित कर सकती हैं। इससे गांव की महिलाओं को अपने मुद्दों पर चर्चा करने, सामूहिक निर्णय लेने और आर्थिक गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए एक मजबूत मंच मिलता है। महतारी सदन में हॉल, किचन, स्टोर, कार्यालय कक्ष तथा दुकान संचालन के लिए पृथक स्थान सहित आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध करायी जा रही हैं। इस सदन में महिलाओं के प्रशिक्षण, बैठकों, उत्पादन, विपणन एवं विभिन्न आर्थिक गतिविधियों के संचालन के लिए एक स्थायी और सुसज्जित स्थल के रूप में उपयोगी साबित होगा। महतारी सदन गांव की माताओं-बहनों के लिए केवल एक भवन नहीं, बल्कि उनके सशक्तिकरण, आत्मनिर्भरता और आर्थिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण केंद्र होगा। इसके माध्यम से महिलाओं को अपनी बैठकों, प्रशिक्षण, स्व-सहायता समूहों की गतिविधियों तथा विभिन्न आर्थिक कार्यों के संचालन के लिए स्थायी, सुविधाजनक और बेहतर स्थान उपलब्ध हो रहा है। राज्य सरकार ने महिलाओं के सशक्तिकरण और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। पिछले ढाई वर्षों में प्रदेश में 481 महतारी सदनों की स्वीकृति दी गई है। यही है विष्णु देव साय की सरकार में महिला सशक्तिकरण की नई तस्वीर-सुरक्षा से सम्मान, सहायता से स्वावलंबन और स्वावलंबन से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ता छत्तीसगढ़।

भारोत्तोलन खिलाड़ियों ने दिखाया दमखम, कड़ी स्पर्धा में दिखी प्रतिभागियों का जौहर

ब्यूरोचीफ अनिल सिंघानिया

बेमेतरा । 26वीं राज्य स्तरीय शालेय क्रीड़ा प्रतियोगिता के अंतर्गत भारोत्तोलन प्रतियोगिता के तीसरे दिन आज प्रतिभागियों के बीच कड़ा स्पर्धा देखने को मिला । प्रतियोगिता में अंडर-17 एवं अंडर-19 आयु वर्ग के खिलाड़ियों ने विभिन्न भार वर्गों में अपनी प्रतिभा और दमखम का शानदार प्रदर्शन किया।

प्रतियोगिता के अवसर पर आयोजित कार्यक्र म में अपर कलेक्टर बेमेतरा प्रकाश भारद्वाज, जनसंपर्क अधिकारी हेमलाल प्रभाकर, संयुक्त संचालक दुर्ग संभाग स्कूल शिक्षा विभाग वेंकट राव, सहायक संचालक के.के. शुक्ला, जिला शिक्षा अधिकारी बेमेतरा अभय जायसवाल एवं वरिष्ठ पत्रकार सुजीत शर्मा सहित अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे। अतिथियों ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि खेल विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक विकास के साथ-साथ उनमें अनुशासन, आत्मविश्वास और प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित करने का महत्वपूर्ण माध्यम है।

प्रतियोगिता के दौरान विभिन्न भार वर्गों में खिलाड़ियों के बीच शानदार और रोमांचक मुकाबले देखने को मिले। अंडर-17 बालिका वर्ग के 44 किलोग्राम भार वर्ग में दुर्ग की रेशम साहू ने प्रथम, रायपुर की शगुन साहू ने द्वितीय और बस्तर की रिंकी भोयर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 48 किलोग्राम में दुर्ग की चंद्रहासिनी पाटिल प्रथम, रायपुर की बबली विश्वास द्वितीय और बिलासपुर की गोमती तृतीय रहीं। 53 किलोग्राम में बिलासपुर की देविका साहू ने पहला, बिलासपुर की दुर्गा पटेल ने दूसरा और दुर्ग की झारिका साहू ने तीसरा स्थान हासिल किया।

58 किलोग्राम भार वर्ग में दुर्ग की जानवी साहू प्रथम तथा झरना बघेल द्वितीय रहीं। 63 किलोग्राम में रायपुर की चुनमुन साहू प्रथम, दुर्ग की गुंजा द्वितीय और बस्तर की लक्ष्मी तृतीय रहीं। 69 किलोग्राम में दुर्ग की मेहजाबीन खान ने स्वर्ण, रायपुर की राधिका साहू ने रजत और बिलासपुर की किरण शाह ने कांस्य पदक जीता। 77 किलोग्राम में दुर्ग की काश्वी कहार प्रथम तथा बस्तर की प्रतिभा द्वितीय रहीं। वहीं 77 किलोग्राम से अधिक भार वर्ग में रायपुर की आराध्या शुक्ला प्रथम, बस्तर की लक्ष्यश्री साहू द्वितीय और बिलासपुर की आकांक्षा तिवारी तृतीय रहीं।

अंडर-19 बालिका वर्ग में भी खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया। 48 किलोग्राम में दुर्ग की चंचल रावत प्रथम, रायपुर की धलेश्वरी द्वितीय और बस्तर की प्रियंका तृतीय रहीं। 53 किलोग्राम में रायपुर की सुमन निषाद ने पहला, दुर्ग की गीतांजलि साहू ने दूसरा और बिलासपुर की अनन्या कुमारी ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। 58 किलोग्राम में दुर्ग की पूर्वी यादव प्रथम, बिलासपुर की रागिनी पटेल द्वितीय और बस्तर की वंदना कुंजाम तृतीय रहीं। 63 किलोग्राम में दुर्ग की नेहा साहू प्रथम, बस्तर की पंचमी मरकाम द्वितीय और बिलासपुर की प्रीति साहू तृतीय रहीं।

69 किलोग्राम में दुर्ग की ललिता सफा प्रथम और रायपुर की ललिता ध्रुव द्वितीय रहीं। 77 किलोग्राम में दुर्ग की आशा गोंड प्रथम, रायपुर की रोशनी दीवान द्वितीय और बिलासपुर की धनसोनम तृतीय रहीं। 86 किलोग्राम में दुर्ग की रोशनी साहू ने प्रथम तथा रायपुर की जिया रानी चतुर्वेदी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। 86 किलोग्राम से अधिक भार वर्ग में रायपुर की अंजू साहू प्रथम और दुर्ग की तृप्ति जमुनकर द्वितीय रहीं।

अंडर-17 बालक वर्ग में 56 किलोग्राम भार वर्ग में दुर्ग के प्रियांशु प्रथम, बस्तर के कुमेंद्र देवांगन द्वितीय और रायपुर के भाव्य कृष्ण तृतीय रहे। 60 किलोग्राम में रायपुर के राजकुमार प्रथम, दुर्ग के भूपेश ठाकुर द्वितीय और बिलासपुर के हेमंत कुमार तृतीय रहे। 65 किलोग्राम में रायपुर के चैतन्य जंघेल प्रथम, दुर्ग के जनेश्वर विश्वकर्मा द्वितीय और बिलासपुर के देवेंद्र दास महंत तृतीय रहे। 71 किलोग्राम में रायपुर के प्रणय नायक प्रथम, दुर्ग के श्रेयांश शर्मा द्वितीय और बिलासपुर के महेश कुमार यादव तृतीय रहे। 79 किलोग्राम भार वर्ग में दुर्ग के नमन गुप्ता ने प्रथम, बिलासपुर के रुद्र पटेल ने द्वितीय और बस्तर के घृतेश भट्ट ने तृतीय स्थान हासिल किया। 88 किलोग्राम में रायपुर के वेदांत प्रथम, दुर्ग के दानेश्वर द्वितीय और सरगुजा के प्रियांशु तृतीय रहे।

अंडर-19 बालक वर्ग में 60 किलोग्राम भार वर्ग में रायपुर के अंकित भारती प्रथम, दुर्ग के शौरभ कुमार द्वितीय और बिलासपुर के भौमिक तृतीय रहे। 65 किलोग्राम में दुर्ग के ई. शिवा प्रथम, रायपुर के कुणाल पटेल द्वितीय और बस्तर के निहाल बघेल तृतीय रहे। वहीं 71 किलोग्राम भार वर्ग में दुर्ग के अर्पित ने प्रथम, रायपुर के हनी ने द्वितीय और बिलासपुर के युवराज ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में विभिन्न संभागों से पहुंचे खिलाड़ियों और निर्णायकों ने अपने शानदार प्रदर्शन एवं महत्वपूर्ण योगदान से आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। खिलाड़ियों ने पूरी मेहनत, अनुशासन और खेल भावना के साथ मुकाबलों में हिस्सा लिया। प्रतियोगिता के दौरान मैदान पर खिलाड़ियों के उत्साह और जोश ने आयोजन को और अधिक रोमांचक बना दिया।

आयोजकों के अनुसार प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में खेल प्रतिभा को प्रोत्साहित करना, उनमें प्रतिस्पर्धात्मक भावना विकसित करना तथा राज्य स्तर पर अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए बेहतर मंच उपलब्ध कराना है। राज्य स्तरीय आयोजन में खिलाड़ियों को अपनी खेल प्रतिभा निखारने और उच्च स्तर की प्रतिस्पर्धा का अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिल रहा है। प्रतियोगिता का समापन 03 सितंबर को होगा।

संक्षिप्त समाचार

लाभचंद बाफना बने भाजपा प्रकोष्ठ संकुल सहसंयोजक

प्रदेश संगठन ने 15 प्रकोष्ठों की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी, कार्यकर्ताओं ने दी बधाई एवं शुभकामनाएं

ब्यूरोचीफ अनिल सिंघानिया

थानखम्हरिया। भारतीय जनता पार्टी छत्तीसगढ़ के प्रदेश अध्यक्ष माननीय श्री किरण सिंह देव जी की सहमति से प्रदेश संगठन द्वारा की गई संगठनात्मक नियुक्तियों के तहत पूर्व विधायक एवं वरिष्ठ भाजपा नेता श्री लाभचंद बाफना जी को भाजपा प्रकोष्ठ संकुल सहसंयोजक का महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा गया है। श्री बाफना जी को प्रदेश भाजपा के अंतर्गत 15 प्रकोष्ठों के प्रकोष्ठ संकुल सहसंयोजक की जिम्मेदारी दी गई है।

श्री लाभचंद बाफना जी को महत्वपूर्ण संगठनात्मक दायित्व मिलने पर भाजपा कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों एवं समर्थकों में हर्ष का माहौल है। कार्यकर्ताओं ने उन्हें नई जिम्मेदारी के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए विश्वास जताया कि वे अपने लंबे संगठनात्मक अनुभव, सक्रियता, कुशल कार्यशैली एवं पार्टी के प्रति समर्पण के माध्यम से इस दायित्व का प्रभावी ढंग से निर्वहन करेंगे।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने कहा कि श्री बाफना जी संगठन के विभिन्न कार्यों में निरंतर सक्रिय रहते हुए कार्यकर्ताओं के साथ बेहतर समन्वय स्थापित करने तथा संगठन को जमीनी स्तर पर मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। ऐसे में उन्हें 15 प्रकोष्ठों की जिम्मेदारी मिलना उनके संगठनात्मक अनुभव एवं सक्रियता का सम्मान है। उनके अनुभव का लाभ पार्टी के विभिन्न प्रकोष्ठों को मिलेगा तथा संगठनात्मक गतिविधियों को और गति मिलने की उम्मीद है।

नई जिम्मेदारी मिलने पर श्री लाभचंद बाफना जी ने भाजपा प्रदेश नेतृत्व एवं वरिष्ठ नेताओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि पार्टी संगठन ने उन पर विश्वास जताते हुए जो महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा है, उसके लिए वे हृदय से आभारी हैं। उन्होंने कहा कि वे पार्टी द्वारा दी गई जिम्मेदारी का पूरी निष्ठा, ईमानदारी, समर्पण एवं सक्रि यता के साथ निर्वहन करेंगे और संगठन को मजबूत बनाने के लिए कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर निरंतर कार्य करते रहेंगे। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ताओं की पार्टी है और संगठन की मजबूती ही पार्टी की सबसे बड़ी शक्ति है। सभी प्रकोष्ठों के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के साथ बेहतर समन्वय स्थापित कर संगठन के कार्यों को गति देना तथा पार्टी की विचारधारा एवं केंद्र और राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना उनकी प्राथमिकता रहेगी।

निष्पक्ष जांच और सभी तथ्य स्पष्ट करे पुलिस - विधायक इंद्र साव

भाटापारा। लंबित मामलों में अपेक्षित कार्यवाही नहीं होने का आरोप लगाते हुए विधायक इंद्र साव । पीड़ित परिवारों के साथ ग्रामीण थाना परिसर में धरने पर बैठ गए। विधायक ने स्पष्ट किया कि जब तक चारों मामलों में निष्पक्ष जांच नहीं होती और सभी तथ्य सामने नहीं आते, तब तक वे थाने से नहीं उठेंगे विधायक का आरोप है कि कई मामलों में चार से छह महीने या उससे अधिक समय बीत जाने के बावजूद जांच पूरी नहीं हुई है । एक मामले में सड़क दुर्घटना में पति की मौत के बाद निष्पक्ष जांच और वर्तमान जांच अधिकारी को बदलने की मांग की गई है। वहीं रूपेश साहू की संदिग्ध मृत्यु के मामले में परिजनों ने मोबाइल कॉल डिटेल रिकॉर्ड (सीडीआर) और कॉल रिकॉर्डिंग उपलब्ध कराने की मांग की है। आवेदन के अनुसार रूपेश साहू 14 मार्च 2026 से लापता था और 17 मार्च को उसका शव बरामद हुआ था। पुलिस पर लगाए गंभीर आरोप धरने के दौरान विधायक इंद्र साव ने पुलिस पर आरोप लगाया कि पुलिस जांच के नाम पर समय काट रही है । उन्होंने सवाल उठाया कि यदि पुलिस निष्पक्ष जांच कर रही है तो चार से छह महीने बाद भी मामलों के तथ्य स्पष्ट क्यों नहीं हुए। विधायक ने आरोप लगाया कि पुलिस राजनीतिक दबाव में भी काम कर रही है । विधायक इंद्र साव ने कहा कि उनका धरना किसी व्यक्ति विशेष के खिलाफ नहीं, बल्कि निष्पक्ष जांच और पीड़ितों को न्याय दिलाने के लिए है। उन्होंने कहा कि पुलिस को कानून और तथ्यों के आधार पर कार्रवाई करनी चाहिए, न कि किसी राजनीतिक दबाव में।

तहसील क्षेत्र में राजस्व त्रुटियों से किसान परेशान

नगर में बिना रेरा पंजीयन के अवैध प्लाटिंग की धड़ल्ले से बिक्री का आरोप

ब्यूरोचीफ अनिल सिंघानिया

थान खम्हरिया। तहसील क्षेत्र में राजस्व रिकॉर्ड में त्रुटियों के चलते किसान लगातार परेशान हो रहे हैं। किसानों का आरोप है कि ऑनलाइन राजस्व रिकॉर्ड में उनका नाम दर्ज है, जबकि मिसल रिकॉर्ड में उसी भूमि को घास भूमि के रूप में दर्ज किया गया है। अब उक्त भूमि का डिजिटल सिग्नेचर कराने के लिए किसान पटवारी, आरआई और तहसीलदार कार्यालय के चक्कर काटने को मजबूर हैं।

किसानों का सवाल है कि यदि पूर्व के मिसल रिकॉर्ड में भूमि घास भूमि के रूप में दर्ज थी, तो उसकी बिक्री नकल कैसे बनी और भूमि का विक्र य एवं पंजीयन किस आधार पर हुआ? वहीं नक्शा, खसरा और बी-1 जैसी सामान्य राजस्व त्रुटियों के सुधार में भी वर्षों लगने की शिकायतें सामने आ रही हैं।

इसी प्रकार बिना बटांकन और नक्शा काटे भूमि का पंजीयन किए जाने के बाद किसानों को नक्शा दुरुस्ती एवं बटांकन के लिए पटवारी कार्यालय के चक्कर लगाने पड़ते हैं। किसानों का आरोप है कि इन कार्यों के लिए कथित रूप से अवैध राशि की मांग भी की जाती है।

नगर पंचायत क्षेत्र में अवैध प्लाटिंग का आरोप

नगर पंचायत क्षेत्र में भी बिना आवश्यक प्रक्रिया पूरी किए कृषि भूमि की अवैध प्लाटिंग किए जाने के आरोप लग रहे हैं। आरोप है कि बिना नक्शा काटे, बटांकन किए, रेरा पंजीयन तथा नगर पंचायत से आवश्यक अनापत्ति प्रमाण पत्र लिए बिना कृषि भूमि को छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजित कर, 5 डिसमिल से कम क्षेत्रफल में भी पंजीयन कराया जा रहा है।

किसानों और स्थानीय लोगों का कहना है कि ग्रीन जोन क्षेत्र में आने वाली भूमि की भी कथित रूप से अवैध प्लाटिंग कर बिक्र ी की जा रही है। इससे न केवल राजस्व नियमों की अनदेखी हो रही है, बल्कि भविष्य में जमीन खरीदने वाले लोगों के सामने भी विवाद की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

स्थानीय लोगों ने पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कराकर राजस्व रिकॉर्ड में व्याप्त त्रुटियों को दूर करने तथा बिना आवश्यक अनुमति के की जा रही प्लाटिंग और पंजीयन पर रोक लगाने की मांग की है। साथ ही यदि जांच में किसी अधिकारी या कर्मचारी की मिलीभगत सामने आती है तो संबंधितों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की गई है।

ग्राम नवलपुर में आयोजित हुआ एक दिवसीय विधिक जागरूकता शिविर

ग्रामीणों को नालसा की विभिन्न योजनाओं, नि :शुल्क कानूनी सहायता एवं अधिकारों की दी गई जानकारी

बेमेतरा। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण बेमेतरा के निर्देशानुसार ग्राम नवलपुर, जिला बेमेतरा में एक दिवसीय विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का मुख्य उद्देश्य ग्रामीणों को राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (नालसा) द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं, निःशुल्क कानूनी सहायता तथा उनके विधिक अधिकारों के प्रति जागरूक करना रहा।

शिविर में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के लीगल एड डिफेंस काउंसिल, अधिकार मित्र एवं लीगल इंटर्न द्वारा ग्रामीणों को विभिन्न महत्वपूर्ण कानूनी प्रावधानों एवं योजनाओं की जानकारी सरल भाषा में दी गई।

मानव तस्करी एवं यौन शोषण के पीड़ितों को नि :शुल्क कानूनी सहायता

सहायक प्रतिरक्षा अधिवक्ता आयुष शुक्ला ने नालसा (मानव तस्करी एवं व्यावसायिक यौन शोषण के पीड़ितों हेतु विधिक सेवाएं योजना), 2015 के संबंध में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यह योजना मानव तस्करी, जबरन वेश्यावृत्ति, यौन शोषण एवं देह व्यापार के पीड़ित महिलाओं, बच्चों तथा अन्य व्यक्तियों को कानूनी सहायता एवं संरक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से संचालित है।

उन्होंने बताया कि ऐसे पीड़ितों को निःशुल्क कानूनी सहायता, न्यायालयीन प्रकरणों में सहयोग, बचाव, सुरक्षा एवं पुनर्वास के लिए सहायता उपलब्ध कराई जाती है। साथ ही पीड़ितों के मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक पुनर्वास पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है।

लीगल इंटर्न निष्ठा ने पॉक्सो अधिनियम के तहत आने वाले पीड़ितों को मिलने वाली कानूनी सहायता एवं अन्य सहयोग के संबंध में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बच्चों को यौन अपराधों से संरक्षण प्रदान करने वाले कानून के महत्वपूर्ण प्रावधानों से ग्रामीणों को अवगत कराया।

एसिड अटैक पीड़ितों के अधिकारों की दी जानकारी

प्रतिरक्षा अधिवक्ता सूरज मिश्रा ने नालसा (एसिड अटैक पीड़ितों को विधिक सेवाएं योजना) के संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि एसिड अटैक से प्रभावित पीड़ितों को निःशुल्क वकील एवं कानूनी सहायता उपलब्ध कराई जाती है। इसके साथ ही मुआवजा प्राप्त करने, उपचार एवं पुनर्वास तथा विभिन्न सरकारी योजनाओं से जोड़ने में भी सहायता प्रदान की जाती है। उन्होंने अपराधियों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई में उपलब्ध विधिक सहायता के बारे में भी जानकारी दी।

बच्चों को सुरक्षित एवं भयमुक्त कानूनी वातावरण उपलब्ध कराने पर जोर

प्रतिरक्षा अधिवक्ता देवेंद्र साहू ने नालसा (बच्चों के लिए बाल-मित्र कानूनी सेवाएं योजना), 2024** के संबंध में ग्रामीणों को जानकारी दी। उन्होंने बताया कि योजना का उद्देश्य बच्चों को कानूनी प्रक्रि या के दौरान सुरक्षित, सहज एवं भयमुक्त वातावरण उपलब्ध कराना है।

उन्होंने बताया कि बाल पीड़ित, बाल अपराधी, अनाथ तथा संरक्षण एवं देखभाल की आवश्यकता वाले बच्चों को आवश्यक कानूनी सहायता उपलब्ध कराई जाती है। पुलिस एवं न्यायालयीन प्रक्रि या के दौरान बच्चों को मानसिक सहयोग देने के साथ उनके अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित की जाती है।

लीगल क्लीनिक के माध्यम से नि :शुल्क कानूनी सलाह

अधिकार मित्र स्वाति कुंजाम ने राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (विधिक क्लीनिक) विनियम, 2011 के संबंध में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा गरीब, जरूरतमंद एवं ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों तक निःशुल्क कानूनी सहायता पहुंचाने के लिए लीगल क्लीनिक संचालित किए जाते हैं।

इन केंद्रों के माध्यम से लोगों को निःशुल्क कानूनी सलाह, आवेदन तैयार करने में सहायता, प्रकरण को समझने में सहयोग तथा उनके अधिकारों एवं विधिक प्रावधानों की जानकारी प्रदान की जाती है। उन्होंने बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों के साथ-साथ जेल, स्कूल, कॉलेज एवं अन्य स्थानों पर भी विधिक जागरूकता एवं सहायता की गतिविधियां संचालित की जाती हैं।

ग्रामीणों में दिखा उत्साह

शिविर के दौरान ग्रामीणों ने विभिन्न कानूनी योजनाओं एवं अपने अधिकारों से संबंधित जानकारी प्राप्त करने में उत्साह दिखाया। उपस्थित ग्रामीणों को नालसा एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली निःशुल्क विधिक सहायता सेवाओं का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया गया।

इस अवसर पर प्रतिरक्षा अधिवक्ताओं, अधिकार मित्र एवं लीगल इंटर्न ने सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण बेमेतरा के निर्देशों के पालन में ग्रामीणों को विधिक जानकारी प्रदान की तथा जरूरतमंद लोगों को उपलब्ध कानूनी सहायता सेवाओं से जुड़ने के लिए जागरूक किया।

बालको टाउनशिप, बदलते परिवेश में बेहतर जीवन की नई राह

बालकोनगर । एक औद्योगिक टाउनशिप केवल आवास और कार्यस्थल तक सीमित नहीं होती, बल्कि वहां रहने वाले लोगों के जीवन, स्वास्थ्य, शिक्षा, सुविधा, मनोरंजन और सामाजिक जुड़ाव का भी महत्वपूर्ण हिस्सा होती है। बालकोनगर में इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए बालको द्वारा टाउनशिप को अधिक सुंदर, हरित, स्वस्थ, सुरक्षित और सुविधाजनक बनाने की दिशा में लगातार प्रयास किए जा रहे हैं।

नगर निगम कोरबा, वार्ड र मांक 39 के पार्षद श्री सतेंद्र दुबे ने कहा, "बालको सामुदायिक विकास के साथ-साथ टाउनशिप के सर्वांगीण विकास की दिशा में भी निरंतर कार्य कर रहा है। टाउनशिप एवं आसपास के क्षेत्रों में सड़कों का निर्माण एवं चौड़ीकरण, आंबेडकर स्टेडियम का आधुनिकीकरण एवं सौंदर्यीकरण तथा अन्य जनहितकारी परियोजनाएं इसके विकास प्रयासों का प्रमाण हैं। इन कार्यों से स्थानीय समुदाय को बेहतर सुविधाएं मिल रही हैं और जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो रहा है। कंपनी द्वारा हरियाली एवं पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता देते हुए आवासीय परिसर में वृक्षारोपण करना तथा सामुदायिक भवनों का निर्माण भी सराहनीय पहल है। ये भवन स्थानीय निवासियों के सामाजिक एवं पारिवारिक आयोजनों में उपयोगी साबित हो रहे हैं। टाउनशिप एवं आसपास के क्षेत्रों के विकास के लिए बालको प्रबंधन के निरंतर प्रयास निश्चित रूप से सराहनीय हैं।"

बालको टाउनशिप की पहचान उसकी हरियाली और खुले स्थानों से भी जुड़ी है। नेहरू उद्यान, फॉरेस्ट वॉकवे, स्मृति उद्यान और जुबली पार्क जैसे स्थानों के विकास और सौंदर्यीकरण से टाउनशिप का वातावरण अधिक आकर्षक और जीवंत हुआ है। बेहतर हरियाली, प्रकाश व्यवस्था और सुविधाओं के साथ ये स्थान निवासियों को प्रकृति के करीब समय बिताने, टहलने और परिवार के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताने के अवसर उपलब्ध कराते हैं।

बालको टाउनशिप में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया है। दिल्ली पब्लिक स्कूल, बालको टाउनशिप स्कूल, एमजीएम स्कूल और बाल सदन जैसी शैक्षणिक संस्थाएं बच्चों और युवाओं को शिक्षा एवं समग्र विकास के अवसर प्रदान कर रही हैं। पढ़ाई के साथ व्यक्तित्व विकास, अनुशासन, रचनात्मकता, खेल और सामाजिक जिम्मेदारी पर भी ध्यान दिया जाता है।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में बालको अस्पताल बालकोनगर और आसपास के समुदाय के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। 125 बेड के इस अस्पताल में सामान्य चिकित्सा के साथ शिशु रोग, स्त्री एवं प्रसूति रोग, हड्डी रोग, ईएनटी, नेत्र रोग, दंत चिकित्सा, रेडियोलॉजी और अन्य विशेषज्ञ सेवाएं उपलब्ध हैं। आईसीयू, डायलिसिस, पैथोलॉजी, सीटी स्कैन, मॉड्युलर ऑपरेशन थिएटर और आपातकालीन सेवाएं जैसी आधुनिक सुविधाएं भी यहां उपलब्ध हैं।

स्वच्छ और स्वस्थ टाउनशिप के लिए वैज्ञानिक अपशिष्ट प्रबंधन पर भी ध्यान दिया जा रहा है। बालको टाउनशिप में स्थापित सॉलिड एंड लिक्विड रिसोर्स मैनेजमेंट सेंटर द्वारा घरेलू कचरे को इलेक्ट्रिक वाहनों के माध्यम से एकत्र कर जैविक और अजैविक कचरे में अलग किया जाता है। जैविक कचरे को खाद में बदला जाता है, जबकि प्लास्टिक कचरे का जिम्मेदार तरीके से सह-प्रसंस्करण किया जाता है। घर के स्तर पर कचरा पृथकरण को बढ़ावा देने के लिए निवासियों को प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम भी से जोड़ा जा रहा है।

टाउनशिप के सामाजिक जीवन को बेहतर बनाने के लिए मंगल भवन का नवीनीकरण किया गया है, जहां जिम सहित सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक आयोजनों के लिए सुविधाएं उपलब्ध हैं। इंडियन कॉफी हाउस की शुरुआत ने भी टाउनशिप के सामाजिक जीवन को नया आयाम दिया है। यह कर्मचारियों, परिवारों, निवासियों और आगंतुकों के लिए मिलने-जुलने और संवाद का सुविधाजनक स्थल बन रहा है। खेल सुविधाओं के विकास के लिए अंबेडकर स्टेडियम के आधुनिकीकरण और सौंदर्यीकरण पर काम किया जा रहा है। इसके साथ ही टाउनशिप एवं आसपास के क्षेत्रों में सड़कों के निर्माण एवं चौड़ीकरण तथा अन्य जनहितकारी परियोजनाओं के माध्यम से नागरिक सुविधाओं को मजबूत किया जा रहा है।

बालको टाउनशिप में हो रहे ये बदलाव इस सोच को दर्शाते हैं कि औद्योगिक प्रगति केवल उत्पादन और व्यवसाय तक सीमित नहीं होती। वास्तविक विकास तब होता है, जब उसके साथ लोगों का जीवन और समुदाय भी बेहतर बने। हरियाली, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, खेल, सामाजिक जुड़ाव और आधुनिक नागरिक सुविधाओं का समन्वय बालकोनगर को एक जीवंत और सुविधासंपन्न समुदाय का स्वरूप दे रहा है।

संक्षिप्त समाचार

रिजल्ट में गड़बड़ी और ऐटीकेटी को लेकर छात्रो में आक्रोश

भाटापारा। नगर में गत दिनों शासकीय गजानंद अग्रवाल महाविद्यालय में परीक्षा परिणामों और एटीकेटी की विसंगतियों को लेकर छात्र आर ोश भड़क उठा है। विश्वविद्यालय प्रशासन की कथित लापरवाही और उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन में गंभीर गड़बड़ियों के खिलाफ बड़ी संख्या में छात्र लामबंद हो गए हैं। विभिन्न छात्र संगठनों के नेतृत्व में विद्यार्थियों ने कॉलेज परिसर में प्रदर्शन करते हुए जमकर नारेबाजी की। छात्रों का सबसे गंभीर आरोप है कि पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय द्वारा जारी परीक्षा परिणामों में भारी तकनीकी त्रुटियां हैं। कई छात्रों को उन विषयों में भी अनुपस्थित या फेल दिखा दिया गया है। जिनकी परीक्षा उन्होंने पूरी निष्ठा के साथ दी थी। छात्रों का कहना है कि उत्तर पुस्तिकाओं की जांच सही ढंग से नहीं की गई है। मात्र 1 या 2 नंबरों के अंतर से जानबूझकर विद्यार्थियों को ऐटीकेटी या 'इयर बैक' दे दिया गया है जिससे उनका पूरा शैक्षणिक वर्ष दांव पर लग गया है। विद्यार्थियों ने आर ोश व्यक्त करते हुए कहा कि परीक्षाओं के लिए वे साल भर कड़ी मेहनत करते हैं, लेकिन विश्वविद्यालय और कॉलेज प्रबंधन की लचर रिजल्ट व्यवस्था के कारण उन्हें मानसिक प्रताड़ना झेलनी पड़ रही है। री-टोटलिंग और री-इवैल्यूएशन की प्रि या भी बेहद धीमी और खचीली है। छात्रों की प्रदर्शन के दौरान उनकी प्रमुख मांगें हैं कि त्रुटिपूर्ण परीक्षा परिणामों को तत्काल सुधार कर नया संशोधित रिजल्ट जारी किया जाए। ऐटीकेटी और अनुपस्थित दिखाए गए प्रभावित छात्रों की उत्तर पुस्तिकाओं का नि: शुल्क पुनर्मूल्यांकन कराया जाए।

मजिस्ट्रेट टिकट चेकिंग के दौरान कुल 1,42,685 रूपयें का राजस्व प्राप्त हुआ

भाटापारा। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे ने यात्रियों को टिकट लेकर यात्रा करने हेतु जागरूक करने के उद्देश्य से 01 सितम्बर को स्टेशनों एवं ट्रेनों में रेलवे मजिस्ट्रेट मयंक सोनी के साथ में टिकट चेकिंग अभियान चलाया गया। इस अभियान में मंडल वाणिज्य प्रबंधक राकेश सिंह के साथ में उप मुख्य टिकट निरीक्षक, मुख्य वाणिज्य निरीक्षक टिकट चेकिंग, 13 टिकट चेकिंग स्टाफ, 04 रेलवे सुरक्षा बल के जवान एवं 06 जीआरपी स्टाफ शामिल थे। यह चेकिंग अभियान 05 ट्रेनों में एवं रायपुर-भाटापारा सेक्शन में चलाया गया। इस मजिस्ट्रेट टिकट चेकिंग अभियान में कुल 250 मामलों से 1,42,685 रुपये बतौर जुमानां राजस्व प्राप्त हुआ। इसमें बिना टिकट के 109 मामलों से 90,500 रुपयें एवं अनियमित टिकट के 65 मामलों से 42,685 रुपयें अनबुक्ड लगेज के 75 मामलों से 8,500 रुपयें तथा स्टेशन में गंदगी फैलाने वाले 01 मामले से 1000 रुपयें राजस्व प्राप्त हुआ। रेल प्रशासन यात्रियों से आग्रह करता है कि वे यात्रा हेतु उचित टिकट , रेल परिसर को साफ सुथरा रखने में भी रेल प्रशासन को सहयोग प्रदान करें।

कृष्ण-सुदामा की मित्रता अनुपम और अद्वितीय, सदैव देती है प्रेरणा - पं. प्रमोद शास्त्री

देवदहरा में नव दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा में सुनाए कृष्ण–सुदामा मिलन, दत्तात्रेय के 24 गुरुओं और परीक्षित मोक्ष के मार्मिक प्रसंग

ब्यूरोचीफ अनिल सिंघानिया

थानखम्हरिया। समीपस्थ ग्राम देवदहरा में आयोजित नव दिवसीय श्रीमद्भागवत महापुराण सप्ताह ज्ञान प्रवचन माला में कथा व्यास आचार्य पंडित प्रमोद शास्त्री ने भगवान श्रीकृष्ण और सुदामा की मित्रता का मार्मिक प्रसंग सुनाते हुए कहा कि दुनिया में मित्रता की अनेक कथाएं आती हैं, लेकिन श्रीकृष्ण और सुदामा की मित्रता अनुपम एवं अद्वितीय है। यह मित्रता सदैव समाज को प्रेम, त्याग और समर्पण की प्रेरणा देती रहेगी।

उन्होंने बताया कि विप्र सुदामा विद्वान, सदाचारी एवं संपन्न संस्कारों वाले ब्राह्मण थे। गुरुकुल में श्रीकृष्ण और सुदामा ने साथ शिक्षा प्राप्त की। एक बार गुरु माता की आज्ञा से दोनों लकड़ी लेने जंगल गए। गुरु माता ने उन्हें चना-गुड़ दिया था। कथा प्रसंग के अनुसार सुदामा ने वह चना-गुड़ स्वयं खा लिया और श्रीकृष्ण को नहीं दिया। बाद में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा पूछे जाने पर सुदामा ने कहा कि वह चना-गुड़ शापित था और उसे खाने वाला निर्धन हो जाता। सुदामा ने कहा कि वे स्वयं गरीब हो जाएं, लेकिन अपने भगवान को गरीब नहीं देखना चाहते थे।

शास्त्री जी ने कहा कि जब सुदामा भगवान श्रीकृष्ण से मिलने द्वारका पहुंचे तो भगवान ने अपने परम मित्र का अत्यंत प्रेम और सम्मान के साथ स्वागत किया। भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं सुदामा के चरणों को प्रेमपूर्वक धोया। द्वारकापुरी में जो सुख-सुविधाएं भगवान को प्राप्त थीं, वही कृपा सुदामा जी पर भी हुई। उन्होंने बताया कि आज भी पोरबंदर में सुदामा जी से जुड़े धार्मिक स्थल श्रद्धा का केंद्र हैं।

कथा के दौरान आचार्य पंडित प्रमोद शास्त्री ने दत्तात्रेय गीता एवं भगवान दत्तात्रेय के 24 गुरुओं का प्रसंग भी सुनाया। उन्होंने बताया कि भगवान दत्तात्रेय ने पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, अग्नि, सर्प सहित प्रकृति और संसार के विभिन्न तत्वों को अपना गुरु माना। उन्होंने कहा कि जीवन में शिक्षा देने वाले अनेक गुरु हो सकते हैं। दीक्षा गुरु एक हो सकते हैं, लेकिन शिक्षा गुरु अनेक होते हैं। मनुष्य को संसार के प्रत्येक अनुभव और परिस्थिति से कुछ न कुछ सीखने का प्रयास करना चाहिए।

उन्होंने कहा कि जीवन में आने वाली सुख-दुख एवं आपत्ति-विपत्ति की परिस्थितियों में भी ज्ञान प्राप्त कर प्रसन्नता के साथ आगे बढ़ना चाहिए। संसार में अनेक लोगों और परिस्थितियों से प्राप्त अनुभव जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

कथा के अंतिम चरण में शास्त्री जी महाराज ने राजा परीक्षित मोक्ष की मार्मिक कथा सुनाई। उन्होंने बताया कि श्रीमद्भागवत कथा के श्रवण के फलस्वरूप राजा परीक्षित को भगवान की कृपा प्राप्त हुई। इसके बाद जनमेजय ने अपने पिता परीक्षित की सर्पदंश से हुई मृत्यु के कारण सर्प यज्ञ का आयोजन किया। यज्ञ को रोकने के लिए ऋषि के पुत्र आस्तिक आगे आए और उनके प्रयास से यज्ञ को रोक दिया गया।

उन्होंने कहा कि संसार में सब कुछ भगवान का है और मनुष्य को जीवन में भगवान की भक्ति, सदाचार एवं परोपकार के मार्ग पर चलना चाहिए।

कथा के यजमान मनेंद्र कुमार साहू, अनुराधा साहू, राजेंद्र कुमार साहू, नरेंद्र साहू, चेतन साहू एवं समस्त साहू परिवार ने कथा का लाभ प्राप्त किया।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से पत्रकार अनिल सिंघानिया एवं पुरुषोत्तम अग्रवाल उपस्थित रहे। उन्होंने कथा स्थल पहुंचकर आचार्य पंडित प्रमोद शास्त्री का सम्मान किया तथा उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

मेले में नाबालिग बच्चों से मारपीट व कथित यौन दुराचार करने वाला आरोपी हिरासत में

भाटापारा। नगर में में आयोजित मेले में खिलौने उठाने पर संचालक गोवर्धन वर्मा ने दो नाबालिग बच्चों पर चोरी का आरोप लगाकर उनके साथ मारपीट व गंभीर यौन उत्पीड़न किया। सूचना मिलते ही थाना शहर पुलिस ने त्वरित कार्रवाई कर आरोपी गोवर्धन वर्मा को हिरासत में ले लिया है। पुलिस पीड़ितों के बयान व साक्ष्य संकलित कर सुसंगत धाराओं में एफआईआर दर्ज कर अग्रिम वैधानिक कार्रवाई किया गया।

महिलाओं ने पारंपरिक श्रद्धा के साथ मनाया कमरछठ पर्व

ब्यूरोचीफ संतोष साहू

भाटापारा। नगर सहित अंचल भर में पारंपरिक लोक आस्था का महापर्व कमरछठ पूरी श्रद्धा, भक्ति और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर नगर के विभिन्न वार्डों और रिहायशी इलाकों में माताओं ने अपनी संतान की लंबी उम्र, सुखी जीवन और परिवार की सुख-समृद्धि के लिए ऐतिहासिक रूप से कठिन माना जाने वाला निर्जला व्रत रखा। सगरी बनाकर की गई विशेष पूजापर्व को लेकर सुबह से ही महिलाओं में भारी उत्साह देखा गया। महिलाओं ने सामूहिक रूप से एकत्रित होकर एक गड्ढा बनाया। सगरी में पानी भरकर उसके चारों ओर कांशी की डंगाल, महुआ पत्ता और पलास आदि गाड़कर विधि-विधान से पूजा-अर्चना की। माताओं ने भगवान शिव-पार्वती और छठ माता की पूजा कर कथा सुनी और अपनी संतान के उज्जवल भविष्य की कामना की। इसके साथ ही पसहर चावल और छह प्रकार की भाजियों का चढ़ा प्रसाद कमरछठ पूजा में पसहर चावल का विशेष महत्व है। व्रती महिलाओं ने माता हलषष्ठी को पसहर चावल, जैंस का दूध-दही और घी अर्पित किया। इसके साथ ही पूजा में छह प्रकार की भाजियों और महुआ के पत्तों का प्रसाद चढ़ाया गया। पूजा संपन्न होने के बाद महिलाओं ने इसी पसहर चावल और छह प्रकार की मिक्स भाजी का पारण कर महिलाओं ने अपना व्रत खोला।

गोविंदा आला रे... नगर के मंदिरों में रही जन्माष्टमी की धूम

ब्यूरोचीफ अनिल सिंघानिया

थान खम्हरिया। नगर एवं आसपास के क्षेत्र में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व श्रद्धा और उल्लास के साथ धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर राधा-कृष्ण जमात मंदिर, सिद्धेश्वर हनुमान मंदिर, जगन्नाथ मंदिर, श्री सरोवर राम मंदिर, महंत वार्ड र मांक-5 स्थित भैया जी मंदिर सहित विभिन्न मंदिरों और घरों में भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव की आकर्षक झांकियां सजाई गईं।

जन्माष्टमी के अवसर पर मौसम खुला रहने के कारण मंदिरों में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी। विशेष साज-सज्जा के साथ मंदिरों को झालर, लाइट, गुब्बारों और रंग-बिरंगी रोशनी से सजाया गया था, जिससे मंदिर परिसर जगमगा उठे। दिनभर श्रद्धालुओं ने व्रत-उपवास रखकर भगवान श्रीकृष्ण की पूजा-अर्चना की और भजन-कीर्तन किए।

रात्रि में जमात मंदिर में विशेष भजन संध्या का आयोजन किया गया, जो देर रात तक चलता रहा। श्रद्धालुओं ने ढोल-नगाड़े, हारमोनियम एवं अन्य वाद्य यंत्रों के साथ उत्साहपूर्वक भजनों की प्रस्तुति दी। जैसे ही रात के 12 बजे, मंदिरों में घंटा-घड़ियाल और शंखध्वनि गूंज उठी।

श्रद्धालुओं ने 'नंद के घर आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की' तथा अन्य बधाई और सोहर गीत गाकर भगवान श्रीकृष्ण के जन्म का उत्सव मनाया। आरती के बाद 'भए प्रगट कृपाला' सहित अन्य भजनों से पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया।

पर्व को लेकर नगर के बाजार में भी दिनभर चहल-पहल रही। व्रत रखने वाले श्रद्धालुओं ने फल-फूल, पूजा सामग्री, भगवान श्रीकृष्ण की मूर्तियां, झूले, रंग-बिरंगी पोशाक एवं श्रृंगार सामग्री की जमकर खरीदारी की। पूजा सामग्री एवं श्रीकृष्ण की प्रतिमाओं की दुकानों पर लोगों की भीड़ देखने को मिली।

इस अवसर पर महंत वसंत बिहारी दास ने बताया कि जन्माष्टमी भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव और अधर्म पर धर्म की विजय के प्रतीक के रूप में मनाई जाती है। इस पर्व पर भगवान श्रीकृष्ण की पूजा-अर्चना के साथ व्रत एवं उपवास का विशेष महत्व है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार जन्माष्टमी का व्रत रखने से जाने-अनजाने में किए गए पापों का क्षय होता है तथा जीवन में सुख, समृद्धि और शांति की प्राप्ति होती है। उन्होंने बताया कि धार्मिक ग्रंथों में जन्माष्टमी के व्रत को अत्यंत पुण्यदायी बताया गया है और एक बार जन्माष्टमी का व्रत रखने से 40 लाख एकादशियों के व्रत के समान फल प्राप्त होने की मान्यता है।

इस अवसर पर प्रहलाद दास वैष्णव, रामचंद्र वैष्णव, विर म दास वैष्णव, सरस्वती शिशु मंदिर के प्राचार्य, लखन साहू, अनिल सिंघानिया, पुरुषोत्तम अग्रवाल, शिवेंद्र बिंदल, प्रमोद सिंघानिया, गिरीश शर्मा, श्रवण सिंघानिया, नटवर शर्मा, आकाश जोशी, दीपक बंसल, आशीष बंसल, निखिल अग्रवाल, मुन्ना सिंघानिया, संजय सिंघानिया, अशोक नामदेव, प्रहलाद सिंह, अमित बिंदल सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे।

कृष्ण के लड्डू गोपाल स्वरूप की पूजा से मिलते हैं 10 लाभ

कृष्ण जन्माष्टमी पर भगवान श्रीकृष्ण के बाल रूप की पूजा होती है। बाल रूप को कान्हा, कन्हैया, बालकृष्ण, बालमुकुंद, गोपाल कृष्ण, लड्डू गोपाल आदि नामों से जाना जाता है। लड्डू गोपाल के एक हाथ में लड्डू रहता है इसलिए उन्हें लड्डू गोपाल कहा जाता है। कृष्ण के इस स्वरूप की पूजा करने से मिलते हैं 10 तरह के लाभ।

- जिस भी घर में लड्डू गोपाल की मूर्ति है उस घर उन्हीं लड्डू गोपाल का होता है। अतः उनकी पूजा घर के मुख्य सदस्य के रूप में करने से घर की रक्षा होती है।
- लड्डू गोपाल की पूजा और देखभाल किसी बच्चे की देखभाल की तरह ही की जाती है। उन्हें समय पर स्नान कराना, वस्त्र पहनाना, चंदन लगाना, श्रृंगार करना, भोग लगाना और सुलाना। यह सभी कार्य करने से ही प्रभु की कृपा प्राप्त होती है।
- लड्डू गोपाल की पूजा करने से मनोकामना पूर्ण होती है और व्यक्ति सुखी जीवन जीता है।
- लड्डू गोपाल की पूजा करने से संतान की इच्छा पूर्ण होती है।
- लड्डू गोपाल की पूजा करने से घर में सुख और समृद्धि बढ़ती रहती है।
- लड्डू गोपाल की पूजा करने से घर में पॉजिटिविटी फैलती है।
- लड्डू गोपाल की पूजा करने से आध्यात्मिकता का विकास होता है और मन बालक जैसा शांत बना रहता है।
- लड्डू गोपाल की पूजा करने से मन में आत्मविश्वास बढ़ता है।
- लड्डू गोपाल की पूजा करने से व्यक्ति मनचाही सफलता प्राप्त करता है।
- लड्डू गोपाल की पूजा करने से घर में कभी भी रोग और शोक नहीं रहता है।

राशि अनुसार पहनाएं कान्हा को परिधान

श्री कृष्ण जन्माष्टमी भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव है। यह हर साल भाद्रपद मास में कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को मनाया जाता है। इस साल कृष्ण जन्माष्टमी 19 अगस्त को मनाई जाएगी। भगवान श्रीकृष्ण का जन्म इसी तिथि को रोहिणी नक्षत्र और वृष लग्न में हुआ था। यह पर्व देशभर में मनाया जाता है। इस साल जन्माष्टमी पर राशि के हिसाब से लगाएं भगवान श्रीकृष्ण को भोग।

मेष राशि - इस राशि के जातकों को भगवान श्रीकृष्ण का श्रृंगार लाल रंग के कपड़े से करने के बाद उन्हें माखन मिश्री का भोग लगाना चाहिए।

वृषभ राशि - जन्माष्टमी के दिन वृषभ राशि के जातकों को कान्हा को माखन का भोग लगाना चाहिए।

मिथुन राशि - मिथुन राशि के जातकों को जन्माष्टमी के दिन श्रीकृष्ण भगवान का चंदन से तिलक करके दही अर्पित करना चाहिए।

कर्क राशि - इस राशि के जातकों को भगवान श्रीकृष्ण का सफेद वस्त्र से श्रृंगार करना चाहिए और फिर उन्हें दूध और केसर का भोग लगाना चाहिए।

सिंह राशि - जन्माष्टमी के दिन सिंह राशि के लोगों को कान्हा जी का श्रृंगार गुलाबी रंग के कपड़ों से करना चाहिए। इसके बाद अष्टगंध का तिलक लगाना चाहिए। प्रसाद में माखन-मिश्री चढ़ाएं।

कन्या राशि - कन्या राशि के लोग जन्माष्टमी के दिन भगवान श्रीकृष्ण को हरे रंग के वस्त्रों से सजाएं। इसके बाद उन्हें मावे का भोग लगाएं।

तुला राशि - तुला राशि के जातक भगवान श्रीकृष्ण को गुलाबी रंग के वस्त्र पहनाएं और इसके बाद उन्हें घी का भोग लगाएं।

वृश्चिक राशि - वृश्चिक राशि के जातक भगवान श्रीकृष्ण को जन्माष्टमी पर लाल वस्त्र पहनाएं और साथ ही उन्हें माखन या दही जरूर चढ़ाएं।

धनु राशि - धनु राशि वाले को भगवान श्रीकृष्ण को पीले परिधान पहनाने चाहिए। पीले रंग की कोई मिठाई जरूर चढ़ाएं।

मकर राशि - कान्हा जी का हल्के नीले रंग के वस्त्रों से श्रृंगार करना चाहिए और पूजा में मिश्री का भोग लगाना चाहिए।

कुंभ राशि - कुंभ राशि के जातक जन्माष्टमी पूजा पर भगवान श्रीकृष्ण को गहरे नीले रंग का वस्त्र पहनाएं। फिर कान्हा को बालूशाही का भोग लगाएं।

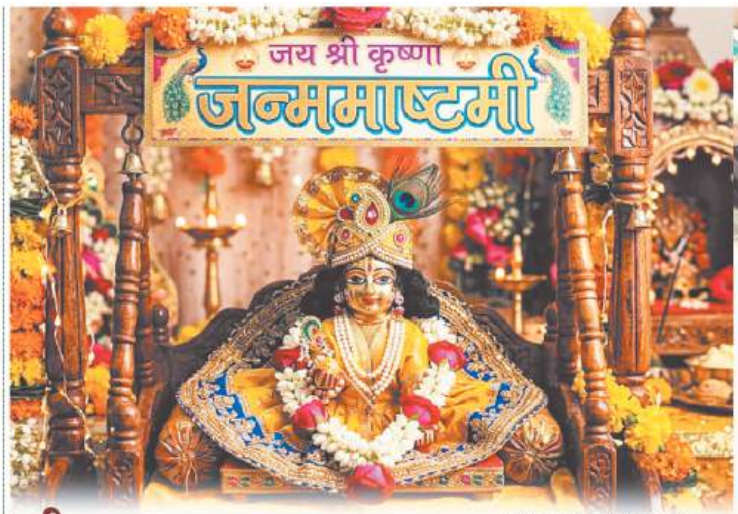

मीन राशि - जन्माष्टमी पर मीन राशि के जातकों को भगवान श्रीकृष्ण को सुनहरे पीताम्बरी वस्त्र और पीले ही रंग के फूल पहनाएं। फिर भोग में केसर और बर्फी चढ़ाएं।

श्रीकृष्ण क्यों चुराते थे माखन? दही हांडी के पीछे है बाल लीला का खास राज

जन्माष्टमी पर भगवान श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप की पूजा की जाती है और उनकी मनमोहक बाल लीलाओं का स्मरण किया जाता है। इनमें माखन चोरी की लीला सबसे ज्यादा लोकप्रिय है। नटखट कान्हा का गोपियों के घर जाकर माखन चुराना और दही की हांडी फोड़ना आज भी भक्तों को खूब आकर्षित करता है। लेकिन क्या श्रीकृष्ण वास्तव में माखन खाने के लिए ही उसे चुराते थे? धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, उनकी इस लीला में प्रेम, भक्ति और आत्मीयता का गहरा संदेश छिपा है।

श्रीकृष्ण को क्यों कहा जाता है माखन चोर

भगवान श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप को उनकी चंचल और मनमोहक लीलाओं के लिए जाना जाता है। ब्रज में बाल गोपाल अक्सर गोपियों के घर पहुंच जाते थे और वहां रखे माखन-दही को अपने सखाओं के साथ मिलकर निकाल लेते थे। इसी कारण उन्हें प्रेम से 'माखन चोर' कहा जाने लगा। धार्मिक कथाओं में बताया जाता है कि श्रीकृष्ण के घर में भी माखन-दही की कोई कमी नहीं थी। ऐसे में उनके लिए दूसरे घरों से माखन चुराने की कोई आवश्यकता नहीं थी। यही बात उनकी इस लीला को साधारण चोरी से अलग करती है। भक्त परंपरा में इसे भगवान और उनके भक्तों के बीच प्रेमपूर्ण संबंध का प्रतीक माना गया है।

श्रीकृष्ण जगत गुरु : विष्णु के सभी अवतारों में सर्वोच्च भगवान श्रीकृष्ण

भगवान श्रीकृष्ण का सभी अवतारों में सर्वोच्च स्थान है। संपूर्ण भारत में उन्हीं के सबसे अधिक और प्रसिद्ध मंदिर है। दुनियाभर में उन्हीं पर शोध हो रहे हैं और दुनियाभर के लोग उन्हीं को सबसे ज्यादा पसंद करते हैं। वे देश, धर्म और संप्रदाय से ऊपर उठकर सर्वमान्य महापुरुष हैं। आओ जानते हैं कि उनके बारे में ऐसे तथ्य जिन्हें जानकर लोग उनकी ओर आकर्षित होते हैं।

भगवान नहीं, प्रेमी और सखा

श्री कृष्ण अपने भक्तों के मित्र, दोस्त या सखा हैं। वे कभी भी किसी भक्त के भगवान नहीं बने। उन्होंने हमेशा मित्रता को ही महत्व दिया। चाहे सुदामा हो, अर्जुन हो गया फिर कलिकाल में भक्त माधवदास और मीरा। श्रीकृष्ण अपने भक्तों के सखा भी और गुरु भी हैं। वे प्रेमी और सखा बनकर गुरु ज्ञान देते हैं। उनके हजारों सखाओं की कहानियों को जानने से यह भेद खुल जाता है।

जग के नाथ जगन्नाथ

श्रीकृष्ण 14 विद्या और 16 आध्यात्मिक और 64 सांसारिक कलाओं में पारंगत थे। इसीलिए प्रभु श्रीकृष्ण जग के नाथ जगन्नाथ और जग के गुरु जगद्गुरु कहलाते हैं।

पूर्णावतार

भगवान श्रीकृष्ण का भगवान होना ही उनकी शक्ति का स्रोत है। वे विष्णु के 10 अवतारों में से एक आठवें अवतार थे, जबकि 24 अवतारों में उनका नंबर 22वां था। उन्हें अपने अगले पिछले सभी जन्मों की याद थी। सभी अवतारों में उन्हें पूर्णावतार माना जाता है।

चमत्कार

उन्होंने बालपन में माता यशोदा मैया को अपने मुख में ब्रह्मांड के दर्शन करा दिए थे। वे सांदीपनि ऋषि के मृत पुत्र को यमराज के पास से पुन: ले आए थे। उन्होंने मथुरा में कुबड़ी कुब्जा को तत्क्षण ही ठीक कर दिया था। उन्होंने इंद्र का अहंकार चूर करने के लिए गोवर्धन पर्वत को अपनी चींटी अंगुली से उठा लिया था। उन्होंने धृतराष्ट्र की सभा में जब द्रौपदी का चीरहरण हो रहा था तब उन्होंने अपने चमत्कार से द्रौपदी की साड़ी लंबी कर दी थी। बर्बरीक का सिर काटकर एक स्थान विशेष पर रख दिया था जहां से वह युद्ध देख सके। जयद्रथ वध के पूर्व उन्होंने अपनी माया से समय पूर्व ही सूर्यास्त करके पुन: उसे उदित कर दिया था। उन्होंने अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा के गर्भ में पल रहे पुत्र परीक्षित पुन: जीवित कर दिया था और अश्वत्थामा को 3 हजार वर्षों तक जीवित रहने के श्राप दे दिया था। इस तरह उनके सैकड़ों चमत्कार हैं।

शरीर का गुण

युद्ध के समय श्रीकृष्ण की देह विस्तृत और कठोर हो जाती थी और नृत्य के समय कोमल। उनके शरीर से मादक गंध निकलती रहती थी। इस गंध को वे अपने गुप्त अभियानों में छुपाने का उपक्रम करते थे। ऐसा माना जाता है कि ऐसा इसलिए हो जाता था क्योंकि वे योग और कलरिपट्टु विद्या में पारंगत थे।

गीता का ज्ञान

दुनिया में वे ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने युद्ध के मैदान में ज्ञान दिया और वह भी ऐसा ज्ञान जिस पर दुनियाभर में हजारों भाष्य लिखे गए और जो आज भी प्रासंगिक है। असल में गीता को ही एक मात्र धर्मग्रंथ माना जाता है। उनके जीवन चरित श्रीमद्भागवत पुराण में वर्णित है। श्रीकृष्ण ने गीता के अलावा भी और भी कई गीताएं कही हैं। जैसे अनु गीता, उद्धव गीता आदि। गीता में उन्होंने धर्म, ईश्वर और मोक्ष का सच्चा रास्ता बताया।

जन्म और मृत्यु एक रहस्य

श्रीकृष्ण का जन्म एक रहस्य है क्योंकि उनका जन्म जेल में हुआ और वह भी विष्णु ने

अपने 8वें अवतार के रूप में 8वें मनु वैवस्वत के मन्वंतर के 28वें द्वापर में भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की रात्रि के 7 मुहूर्त निकल गए और 8वां उपस्थित हुआ तभी आधी रात के समय सबसे शुभ लग्न उपस्थित हुआ। उस लग्न पर केवल शुभ ग्रहों की दृष्टि थी। रोहिणी नक्षत्र तथा अष्टमी तिथि के संयोग से जयंती नामक योग में लगभग 12 बजे अर्थात शून्य काल में जन्म लिया था।

गीता का ज्ञान

दुनिया में वे ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने युद्ध के मैदान में ज्ञान दिया और वह भी ऐसा ज्ञान जिस पर दुनियाभर में हजारों भाष्य लिखे गए और जो आज भी प्रासंगिक है। असल में गीता को ही एक मात्र धर्मग्रंथ माना जाता है। उनके जीवन चरित श्रीमद्भागवत पुराण में वर्णित है। श्रीकृष्ण ने गीता के अलावा भी और भी कई गीताएं कही हैं। जैसे अनु गीता, उद्धव गीता आदि। गीता में उन्होंने धर्म, ईश्वर और मोक्ष का सच्चा रास्ता बताया।

जन्म और मृत्यु एक रहस्य

श्रीकृष्ण का जन्म एक रहस्य है क्योंकि उनका जन्म जेल में हुआ और वह भी विष्णु ने अपने 8वें अवतार के रूप में 8वें मनु वैवस्वत के मन्वंतर के 28वें द्वापर में भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की रात्रि के 7 मुहूर्त निकल गए और 8वां उपस्थित हुआ तभी आधी रात के समय सबसे शुभ लग्न उपस्थित हुआ। उस लग्न पर केवल शुभ ग्रहों की दृष्टि थी। रोहिणी नक्षत्र तथा अष्टमी तिथि के संयोग से जयंती नामक योग में लगभग 12 बजे अर्थात शून्य काल में जन्म लिया था। इसी तरह उन्होंने मृत्यु का भी चयन तब किया जबकि उन्हें अपने धाम जाना था। पौराणिक मान्यताओं अनुसार प्रभु ने त्रेता में राम के रूप में अवतार लेकर बाली को छुपकर तीर मारा था। कृष्णावतार के समय भगवान ने उसी बाली को जरा नामक बहेलिया बनाया और अपने लिए वैसी ही मृत्यु चुनी, जैसी बाली को दी थी।

विराट स्वरूप

उन्होंने अक्रूरजी को अपना विराट स्वरूप दिखाया, फिर उद्धव को, फिर राजा मुचुकुंद को, फिर शिशुपाल को, फिर धृतराष्ट्र की सभा में, फिर अर्जुन को 3 बार विराट स्वरूप दिखाया। कहते हैं कि उन्होंने कलियुग में माधवदास को भी अपना विराट स्वरूप दिखाया था।

सभी और वे पूजा जाते हैं

श्रीकृष्ण को पुरी में जगन्नाथ के रूप में, द्वारिका में द्वारिकाधीश के रूप में, गुजरात में श्रीनाथ के रूप में, राजस्थान में सांवलिया सेठ के रूप में पूजे जाते हैं। इसी तरह हर राज्य में उनका एक अलग ही स्वरूप है।

लाखों लोगों को मिला मोक्ष

श्रीकृष्ण के माध्यम से उन्हीं के काल में हजारों महिलाओं, द्रौपदी, राधा, रुक्मिणी, सत्यभामा और गोपियों को मोक्ष मिला या कहें कि ज्ञान प्राप्त हुआ था। उन्होंने भक्ति मार्ग के माध्यम से अपने भक्तों को ज्ञान प्राप्त कराया। गोपियों से लेकर मीरा तक और सुदामा से लेकर सूरदास तक सभी को मोक्ष मिला।

जन्माष्टमी को वर्षों बाद बनें कई शुभ योग

जन्माष्टमी का पर्व भाद्रपद माह की कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि का मनाया जाता है। जन्माष्टमी का पर्व भगवान विष्णु के आठवें अवतार भगवान कृष्ण के प्राकट्य का उत्सव है। इस साल जन्माष्टमी का पर्व 4 सितंबर को मनाया जाएगा। इस बार की जन्माष्टमी कई मायनों में बहुत ही खास होने वाली है। इस बार जन्माष्टमी पर कई शुभ योग का संयोग रहने वाला है। आइए जानते हैं जन्माष्टमी पर इस बार कौन कौन से योग बन रहे हैं। साथ ही जानें जन्माष्टमी व्रत पारण का समय।

3 सितंबर को रात में 12 बजकर 30 मिनट से रोहिणी नक्षत्र व्याप्त होगा। वहीं, 4 सितंबर को रात 11 बजकर 5 मिनट पर रोहिणी नक्षत्र समाप्त होगा। ऐसे में अबकी बार जन्माष्टमी 4 सितंबर यानी शुक्रवार को रोहिणी नक्षत्र अष्टमी तिथि के संयोग में मनाई जाएगी। वहीं, कृष्णजी की छठी बुधवार को मनाई जाएगी। ऐसे में अबकी बार जयंती योग का दुर्लभ संयोग बना है। पुराणों में जयंती योग में जन्माष्टमी का मिलना पूर्व जन्मों का फल माना जाता है क्योंकि इस दुर्लभ संयोग में जन्माष्टमी व्रत को करने से महान पुण्य की प्राप्ति होती है। निर्णय सिंधु में बताया गया है कि यानी रोहिणी युक्ता जन्माष्टमी में कृष्ण जन्माष्टमी का व्रत करने से तीन जन्मों के पापों का शमन हो जाता है। शास्त्रों के अनुसार, जब भी भगवान कृष्ण की जन्म बुधवार या सोमवार को होता है और साथ में रोहिणी नक्षत्र और अष्टमी तिथि का संयोग बनता है तो यह जयंती योग के परम पुण्य फल को देने वाला हो जाता है। इस साल जन्माष्टमी शुक्रवार होने से बुधवार के दिन श्रीकृष्ण भगवान की छठी बुधवार को मनाई जाएगी। यह भी एक उत्तम संयोग है। पंडित जी के अनुसार, पद्म पुराण में बताया गया है कि, जो श्रद्धालु भक्त जयंती योग में जन्माष्टमी का व्रत करते हैं वह प्रेत योनी में पड़े अपने पूर्वजों को भी पाप मुक्त करवाकर पुण्य लोक में स्थान दिलाने में सक्षम होते हैं। इसलिए जयंती योग में जन्माष्टमी होने पर स्त्री पुरुष बाल वृद्ध सभी को श्रद्धा पूर्वक जन्माष्टमी का व्रत करना चाहिए।

जन्माष्टमी 2026 कौन कौन से योग बने हैं?

जन्माष्टमी पर इस बार जयंती योग, हंस योग, मालव्य राजयोग, बुधादित्य राजयोग, हर्ष योग का संयोग रहने वाला है। ऐसे में इस साल जन्माष्टमी का व्रत करने वालों को दोगुना फल प्राप्त होगा। साथ ही इस दिन व्रत करने वालों को अपने पूर्वजों को भी प्रेत योनी से मुक्त कराने का मौका मिलेगा। बात करें जन्माष्टमी व्रत पारण की तो जन्माष्टमी व्रत का पारण 5 सितंबर शनिवार के दिन सूर्योदय के बाद किया जाएगा। 4 सितंबर की मध्यरात्रि जब भगवान कृष्ण का जन्म हो चुका होगा तो उस समय चरणामृत और प्रसाद लेकर पारण कर सकते हैं। लेकिन, अन्न ग्रहण सूर्योदय के बाद ही करना उत्तम शास्त्र सम्मत विधान माना गया है। 5 सितंबर को सूर्योदय का समय 6 बजकर 1 मिनट पर होगा। इसके बाद आप आराम से पारण कर सकते हैं।

जन्माष्टमी के दिन कान्हा को लगाएं इन चीजों का भोग, संतान रहेगी सेहतमंद और बढ़ेगी सुख-समृद्धि

भगवान श्री कृष्णा के जन्मदिन पर घर में सुख-समृद्धि बनाए रखने के लिए भोग बनाते समय भी आपको कई बातों का खासतौर से ध्यान रखना जरूरी होता है।

भगवान विष्णु के आठवें अवतार के धरती पर अवतरण दिवस पर जन्माष्टमी का पर्व हर साल बेहद धूमधाम से मनाया जाता है, जिन्हें भगवान श्रीकृष्ण के नाम से जाना जाता है। भगवान श्रीकृष्ण का जन्म भाद्रपद माह की कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को रोहिणी नक्षत्र में हुआ था। यही कारण है कि जन्माष्टमी भाद्रपद महीने के अंधेरे पखवाड़े के आठवें दिन मनाई जाती है। इस बार भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि 4 सितंबर को मनाया जाएगा। घर में सुख-समृद्धि बनाए रखने के लिए श्री कृष्णा के लिए आपको भोग तैयार करना चाहिए। तो आइये जानते हैं जन्माष्टमी के पावन अवसर पर श्रीकृष्ण को किन चीजों का भोग लगाना चाहिए।

जन्माष्टमी के दिन श्री कृष्णा को किन चीजों का भोग लगाना चाहिए?

सेलिब्रिटी एस्ट्रोलॉजर प्रद्युम्न सूरी के अनुसार, इस दिन श्रद्धालु नदनी व्रत रखा जाता है, जिसमें कृष्ण जन्म के समय विशेष पूजा की जाती है। इसे निशिता पूजा कहा जाता है। पूजा के दौरान पंचामृत व खीर-माखन का भोग लगाने से संतान की सेहत अच्छी रहती है। इसके साथ ही सुख-संपत्ति के बढ़ोतरी के साथ आपको हर क्षेत्र में विजय प्राप्त होती है।

निशीथ काल में 45 मिनट पूजा का मुहूर्त

जन्माष्टमी पर निशीथ पूजा का मुहूर्त रात 11:57 बजे से 12:43 बजे तक रहेगा। पूजा की अवधि 45 मिनट होगी। मध्यरात्रि का क्षण रात 12:20 बजे रहेगा। चंद्रोदय का समय रात 11:29 बजे बताया गया है। श्रद्धालु इसी अवधि में भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव मनाकर विधिवत पूजन कर सकते हैं।

जन्माष्टमी के दिन कैसे करें श्री कृष्णा की पूजा?

- पूजा की थाली में तुलसी के कुछ पत्तों के साथ माखन और मिश्री रखें।
- दूध, दही, शहद, शक्कर और घी का पंचामृत का भोग लगाएं।
- गाय के दूध से बनी शुद्ध मिठाई का भोग लगाएं।
- भगवान श्रीकृष्ण को उनके मनपसंद खीर-माखन का भोग लगाकर प्रसाद का वितरण करें।
- भगवान श्रीकृष्ण को श्रीखंड बहुत पसंद है, इसलिए आप उन्हें श्रीखंड का भोग भी लगा सकते हैं।
- इसके साथ ही पूजा की थाली में प्रसाद में मेवे और फल जरूर रखें।

पंचशील पंजाबी एसोसिएशन ने मनाया कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव

सांसद विजय बघेल का शाल-श्रीफल भेंटकर किया आत्मीय स्वागत

ब्यूरोचीफ अनिल सिंघानिया

थानखमरिया। पंचशील पंजाबी एसोसिएशन द्वारा कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव का आयोजन पंजाबी पैलेस, सेक्टर-5 भिलाई में किया गया। कार्यक्रम पंचशील पंजाबी एसोसिएशन के संयोजक अजय भसीन के नेतृत्व में आयोजित हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि दुर्ग लोकसभा सांसद श्री विजय बघेल का शाल एवं श्रीफल भेंटकर आत्मीय स्वागत किया गया।

कार्यक्र म को संबोधित करते हुए संयोजक अजय भसीन ने समाज के लोगों से एकजुट होकर जनहित के कार्यों में सहयोग करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा, "आइए, हम सभी एकजुट होकर सांसद महोदय को अपना समर्थन दें और जनहित के हर सकारात्मक प्रयास में उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलें।" मुख्य अतिथि सांसद विजय बघेल ने पंचशील पंजाबी एसोसिएशन द्वारा किए जा रहे सामाजिक एवं जनसेवा कार्यों की सराहना की। उन्होंने संस्था के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को शुभकामनाएं देते हुए समाज की एकजुटता और सेवा कार्यों को आगे बढ़ाने की बात कही।

इस अवसर पर समाज के अध्यक्ष कैलाश मल्होत्रा, महासचिव जितेन्द्र उपल, नरेश खोसला, राम ओबेराय, दीपक भाटिया, गुलशन अरोरा, अरुण ग्रोवर, उमेश ग्रोवर, महेंद्र मिनोचा, राकेश मल्होत्रा, भूषण अदलखा, नवीन कौरा, राकेश ढोढ़ी, प्रतीक चोपड़ा, अनुज नारद, नयन गुप्ता सहित बड़ी संख्या में पदाधिकारी एवं समाज के सदस्य उपस्थित रहे।

आरोपी के कब्जे से जप्त हुआ था 17.060 किलोग्राम अवैध मादक पदार्थ गांजा

भाटापारा। पुलिस अधीक्षक गौरव राय के कुशल निर्देशन में पुलिस द्वारा अवैध मादक पदार्थों की तस्करी करने वाले अपराधियों के विरुद्ध न केवल त्वरित कार्यवाहियां की जा रही हैं, बल्कि गुणवत्तापूर्ण विवेचना के जरिए उन्हें अदालतों से सख्त सजा भी दिलाई जा रही है। इसी कड़ी में विशेष न्यायाधीश संगीता नवीन तिवारी के न्यायालय ने शहर पुलिस की उत्कृष्ट विवेचना व अकाट्य साक्ष्यों के आधार पर गांजा तस्करी के आरोपी शिबा रायता को 07 वर्ष का सश्रम कारावास एवं 50,000 के अर्थदंड की सजा सुनाई है। शहर में पूर्व पदस्थ सहायक उपनिरीक्षक कुलमणी बारीक को विश्वसनीय मुखबिर से गोपनीय सूचना प्राप्त हुई कि उड़ीसा से जोधपुर सुपरफास्ट एक्सप्रेस ट्रेन के जरिए मादक पदार्थ गांजा लेकर अंतरराज्यीय तस्कर भाटापारा आ रहे हैं। सूचना मिलते ही पुलिस टीम ने बिना समय गंवाए तत्काल रणनीति बनाई। कानून के सभी प्रावधानों का कड़ाई से पालन करते हुए पुलिस टीम ने स्टेशन रोड स्थित मस्जिद व हनुमान मंदिर अंडरब्रिज के पास घेराबंदी की। पुलिस की मुस्तैदी देख तस्करों में भगदड़ मच गई, लेकिन मुस्तैद जवानों ने दौड़ाकर मुख्य आरोपी शिबा रायता को ट्रॉली सूटकेस व बैग सहित मौके पर ही धर दबोचा। आरोपी के कब्जे से भूरे रंग के सेलो टेप में लपेटा हुआ 17.060 किलोग्राम मादक पदार्थ गांजा बरामद किया गया। गिरफ्तारी के बाद शहर पुलिस ने प्रकरण की हर एक कड़ी को वैज्ञानिक व विधिक तरीके से जोड़ा व तलाशी, जब्ती, समरस पंचनामा एवं तौल कार्यवाही इलेक्ट्रॉनिक तराजू से सत्यापन की संपूर्ण प्रि या गवाहों के समक्ष पारदर्शी तरीके से पूरी की गई। आरोपी के पास से बरामद मोबाइल नंबरों की तकनीकी जांच के जरिए तस्करी नेटवर्क के साक्ष्य संकलित किए गए। पुलिस टीम ने निष्पक्षता व तत्परता दिखाते हुए सभी स्वतंत्र गवाहों के बयान एवं फॉरेंसिक रिपोर्ट एकत्रित कर माननीय न्यायालय में चालान प्रस्तुत किया। न्यायालय में विचारण के दौरान अतिरिक्त लोक अभियोजक संतोष कुमार कन्नौजे द्वारा प्रस्तुत तर्कों तथा विवेचना अधिकारी सहायक उपनिरीक्षक कुलमणी बारीक द्वारा जुटाए गए मजबूत साक्ष्यों के आधार पर विशेष न्यायालय द्वारा फैसला सुनाते हुए आरोपी को धारा 20(बी)(2)(बी) एनडीपीएस की धारा के तहत दोषी पाया गया। शिबा रायता पिता प्रताप रायता, उम्र 31 वर्ष, निवासी ग्राम भालीपंक, पंचायत चांदीपुट, थाना मोहना, जिला गजपति उड़ीसा को 07 वर्ष का सश्रम कारावास एवं 50,000 अर्थदंड अर्थदंड न पटाने पर 01 माह का अतिरिक्त सश्रम कारावास की सजा सुनाई गई।

नाबालिग बालिका से दुष्कर्म करने वाला आरोपी गिरफ्तार

भाटापारा। पुलिस द्वारा महिलाओं एवं बालिकाओं के विरुद्ध होने वाले अपराधों पर अत्यंत संवेदनशीलता एवं गंभीरता से त्वरित कार्रवाई की जा रही है। ऐसे मामलों में आरोपियों की शीघ्र पहचान, गिरफ्तारी एवं उनके विरुद्ध कठोर वैधानिक कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं। इसी क्रम में ग्रामीण पुलिस द्वारा नाबालिग बालिका के साथ दुष्कर्म की घटना को अंजाम देने वाले आरोपी को त्वरित कार्रवाई करते हुए गिरफ्तार किया गया है। ग्रामीण क्षेत्र अंतर्गत प्रार्थी द्वारा रिपोर्ट दर्ज कराई गई गत दिनों शाम को आरोपी बबलू देवार द्वारा नाबालिग बालिका को चिप्स खिलाने का लालच देकर बहला-फुसलाकर सुनसान स्थान पर ले जाया गया तथा उसके साथ दुष्कर्म की घटना को अंजाम दिया गया। घटना के पश्चात आरोपी बालिका को छोड़कर मौके से फरार हो गया था। पीड़िता के परिजनों की शिकायत पर पुलिस ने धारा 137(2), 65(2), 115(2) बीएनएस तथा धारा 4, 6 पॉक्सो एक्ट के तहत अपराध पंजीबद्ध कर कार्यवाही की है।

शनिवार 5 सितंबर को निकलेगी भव्य शोभा यात्रा ,एक लाख लोग जुटेंगे

अखण्ड रामनाम सप्ताह समारोह के समापन जुलुस को लेकर एसपी. ने किया मार्ग का अवलोकन

ब्यूरोचीफ संतोष साहू

भाटापारा। देश का सबसे बड़ा अनूठा आयोजन अखण्ड रामनाम सप्ताह समारोह इस वर्ष 88वें वार्षिक उत्सव के रूप में मनाया जा रहा है और यह समारोह अब अपने अंतिम चरण की ओर पहुंच गया है। आगामी 5 सितंबर दिन शनिवार को भव्य शोभा यात्रा राम सप्ताह मंडप से निकलेगी जिसमें मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान राम के रथ के आगे लगभग 110 से अधिक भजन - कीर्तन मंडली जो कि जांजगीर - चांपा , महासमुंद , कवर्धा , मुंगेली, बेमेतरा, दुर्ग , बिलासपुर,रायपुर, जिलो के दुरस्थ गांव से अलग अलग वेशभूषा एवं तरह तरह के वाद्य यंत्रो के साथ नृत्य करते हुए चलेंगे। उक्त शोभा यात्रा लगभग 16 किलोमीटर का शहर भ्रमण करते हुए दुसरे दिन प्रातः 4 बजें वापस रामनाम सप्ताह मंडप स्थल पर पहुंचेगी। शोभा यात्रा के लिए निर्धारित सड़क मार्ग राम सप्ताह मंडप से प्रारंभ होकर गोविंद चौक, सदर बाजार , पंचायती मंदिर, जैन मंदिर, महासती मंदिर मोड़ से भगतसिंह वार्ड हटरी बाजार , अनाज लाईन ,आजाद चौक होते हुए निकलेगी। उक्त समारोह को देखने संपूर्ण शहर व आस पास के क्षेत्र के अलावा छोटे बड़े महानगरों से भी भारी तादाद में श्रद्धालु पहुंचते है । गत वर्ष के आयोजन में लगभग 1 लाख से अधिक लोगो की भीड़ उमड़ पड़ी थी । बाहर से आने वाले तमाम श्रद्धालु भक्तो को शहर के अनेक समाजसेवी सस्थाओं व धार्मिक संस्थाओं द्वारा सभी प्रकार के ज़ेज्य पदार्थ व पेय पदार्थ उपलब्ध कराये जाते रहे है। इस वर्ष भी अखण्ड सिंधु महाबली संस्था , उत्तरायण संस्था, जेसीस क्लब, मयुर क्लब, लॉयंस क्लब, डडसेना कलार समाज , यादव समाज, साहू समाज , छत्तीसगढ़ी अग्रवाल समाज,अ ग्रवाल महासभा, अघोर आश्रम सहित तमाम अन्य संस्थाओं द्वारा लोगो को निःशुल्क पोहा , ज़ेजन , केला , सेब, भजिया , नाश्ता, नींबु पानी, शरबत व अन्य खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराये जायेंगे। उपरोक्त तमाम निः शुल्क खाद्य पदार्थ वितरण वाले स्थल सदर बाजार कांग्रेस भवन चौक हटरी बाजार , गुरूद्वारा , महासती मंदिर रोड सहित अन्य प्रमुख स्थल पर उपलब्ध होंगे। शोभा यात्रा के मार्ग में किसी भी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न न हो इसको लेकर पुलिस प्रशासन द्वारा चाक - चौबंद व्यवस्था की जाती रही है जिसमें रायपुर , सिमगा, सुहेला , पलारी , कसडोल, बलौदाबाजार, भाटापारा सहित अन्य थाना से पर्याप्त पुलिस बल , महिला बल , यातायात बल की तैनाती पूर्व के वर्षो में की जाती रही है। इस वर्ष भी व्यवस्था को चाक - चौबंद बनाये रखने की जरूरत है । इस बीच गुरूवार शाम को एसपी. गौरय राय , एएसपी. सिन्हा, अनुविभागीय पुलिस अधिकारी तारेश साहू , नगर निरीक्षक हेमंत पटेल , अमित पाटले , नरेश कांगे सहित अन्य पुलिस अधिकारियों ने व्यवस्था का जायजा लिया व चाक - चौबंद व्यवस्था शोभा यात्रा जुलुस के दौरान बनाये रखने के लिए रोड मैप तैयार किया।

संक्षिप्त समाचार

सिंधी समाज का त्यौहार थदड़ी उल्लास पूर्वक सम्पन्न

भाटापारा। किसी भी धर्म के त्यौहार और संस्कृति उनकी पहचान होते हैं,त्यौहार उत्साह,उमंग व खुशियों का ही स्वरूप है।लगभग सभी धर्मो व समाज के कुछ विशेष त्योहार व पर्व होते हैं,जिसे वह उत्साह व प्रेम से मनाते हैं ऐसा ही सिंधी समाज का पर्व है थदड़ी।थदड़ी शब्द का सिंधी भाषा में अर्थ होता है ठंडा,शीतल, रक्षाबंधन के आठवें दिन मनाए जाने वाले इस त्योहार में सिंधी समाज के घरों में चूल्हा नहीं जलाया जाता, महिलाएँ एक दिन पहले घरों में बनाया गया ठंडा खाना जिसमें लोला, कूप्पर, मीठी व नमकीन कोकी, तारवाँ, बेसन की मिस्सी व अन्य पारंपरिक व्यंजन एवं सूखी सब्जियां भिंडी, करेला, आलू, भजिया सहित कई प्रकार के व्यंजन शामिल है बना के रख लेते हैं, व रात्रि को अग्नि (चूल्हे) की पूजा कर ठंडा करती है।थदडी के दिन समाज की महिलाएँ सुबह नहाकर तैयार होकर परिवार सहित इक्कठे होकर जगत जननी माँ शीतला के मंदिर जाकर विधि विधान से माता रानी की पूजा कर घर परिवार में शांती,सुख समृद्धि की प्रार्थना मंगल गीत ठार माता ठार पहिंजे बचणन खे ठार (अर्थ- हे माता हम बच्चों को शांती व शीतलता प्रदान कर)गाकर आशिर्वाद मांगती हैं,पर्व की एक महत्वपूर्ण परंपरा पूजा के के बाद बहन- बेटी के ससुराल में ठंडा भोजन भेजने के पश्चात अपने अपने घरों में पूरे परिवार मिलकर ठंडा भोजन करती है।

शास बहु उ मा वि भाटापारा में व्याख्याता जी. पी. वर्मा के सेवानिवृत्ति पर सम्मान समारोह आयोजित

भाटापारा। शासकीय बहुउद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के वरिष्ठ व्याख्याता जी. पी. वर्मा भूगोल के सेवानिवृत्ति के अवसर पर सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यर म में विद्यालय की प्राचार्य डॉ. अर्चना वर्मा, शिक्षकगण, कर्मचारी, छात्र तथा जी-पी-वर्मा के परिवारजन तथा मित्र शामिल हुए। वर्मा अनुशासनप्रिय एवं कर्तव्यनिष्ठ शिक्षक के रूप में विद्यालय में अपनी विशिष्ट पहचान रखते थे। उन्होंने विद्यार्थियों को इन गतिविधियों के लिए प्रोत्साहित करने के साथ-साथ उन्हें गीत-संगीत एवं खेलकूद का प्रशिक्षण भी दिया। कार्यर म में प्राचार्य डॉ. अर्चना वर्मा सहित सभी लोगो ने उनके प्रति उनके समर्पण को याद करते हुए उनके स्वस्थ, सुखद एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

विकासखंड स्तरीय कराटे प्रतियोगिता का हुआ आयोजन जिला स्तरीय खेलने के लिए 44 बच्चों का हुआ चयन

भाटापारा। विकासखंड स्तरीय कराटे प्रतियोगिता का आयोजन मयूर स्कूल में हुआ जहां भाटापारा के अलग-अलग स्कूलों के कक्षा छठवीं से 12वीं तक के 200 से अधिक छात्र छात्राओं ने हिस्सा लिया । उक्त आयोजन में शाश्वत लिटिल स्टार इंग्लिश मीडियम स्कूल सिंगारपुर , स्वामी आत्मानंद विद्यापीठ स्कूल ,मॉडर्न इंग्लिश मीडियम स्कूल ,मयूर क्लब , स्वामी आत्मानंद स्कूल,शिवलाल मेहता , स्वामी आत्मानंद करही बाजार स्कूल एवं विकासखंड के अंतर्गत आने वाले अन्य स्कूलों से भी बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया । कराटे में बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले बच्चों का जिला स्तर के लिए चयन हुआ चयनित खिलाड़ी 3 सितंबर को होने वाले जिला स्तरीय चयन ट्रायल प्रतियोगिता में भाटापारा विकासखंड का प्रतिनिधित्व करेंगे। उक्त प्रतियोगिता विकासखंड खेल अधिकारी के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ।

अधिकारियों-कर्मचारियों की कमी से जूझ रहा थानखम्हरिया तहसील कार्यालय

15 स्वीकृत पदों में 9 रिक्त, नायब तहसीलदार के दोनों पद खाली; महज चार कर्मचारियों के भरोसे कामकाज

ब्यूरोचीफ अनिल सिंघानिया

थानखम्हरिया। स्थानीय तहसील कार्यालय में अधिकारियों एवं कर्मचारियों के स्वीकृत पदों के रिक्त होने से कार्यालय का कामकाज प्रभावित हो रहा है। क्षेत्रफल और जनसंख्या के अनुपात में स्वीकृत पदों की संख्या पहले ही कम महसूस की जा रही है, वहीं आधे से अधिक पद रिक्त होने के कारण आम लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। कर्मचारियों के लिए शासकीय आवास की सुविधा नहीं होने से भी कार्यालयीन कार्य प्रभावित हो रहे हैं।

बेमेतरा जिले की थानखम्हरिया तहसील क्षेत्रफल एवं जनसंख्या की दृष्टि से बड़ी और महत्वपूर्ण तहसील है। तहसील अंतर्गत करीब 78 गांव आते हैं, जिनकी कुल जनसंख्या लगभग एक लाख है। तहसील क्षेत्र के एक छोर से दूसरे छोर की दूरी लगभग 50 किलोमीटर है। ऐसे में राजस्व संबंधी कार्यों के लिए बड़ी संख्या में ग्रामीणों एवं किसानों को तहसील कार्यालय पर निर्भर रहना पड़ता है।

15 में से 9 पद रिक्त

तहसील कार्यालय में तहसीलदार का 1, नायब तहसीलदार के 2, सहायक ग्रेड-2 के 4, सहायक ग्रेड-3 के 5, स्टेनो टाइपिस्ट का 1, वाहन चालक का 1 तथा भृत्य का 1 पद स्वीकृत है। इनमें नायब तहसीलदार के दोनों पद, सहायक ग्रेड-2 के 2 पद, सहायक ग्रेड-3 के 3 पद तथा स्टेनो टाइपिस्ट का 1 पद रिक्त है। इस प्रकार कुल 15 पदों में से 9 पद रिक्त बताए जा रहे हैं।

इनमें से सहायक ग्रेड-2 के कर्मचारी किशन दास मानिकपुरी को तहसील कार्यालय बेमेतरा तथा भृत्य स्वाती ध्रुव को तहसील कार्यालय साजा में संलग्न किया गया है। कर्मचारियों की पहले से कमी के बावजूद यहां के कर्मचारियों को अन्य कार्यालयों में संलग्न किए जाने को लेकर भी सवाल उठ रहे हैं। वर्तमान में तहसील कार्यालय का कामकाज महज चार कर्मचारियों के भरोसे संचालित होने की बात कही जा रही है।

नायब तहसीलदार के दोनों पद खाली

नायब तहसीलदार के दोनों पद रिक्त होने से न्यायालयीन प्रि या भी प्रभावित हो रही है। राजस्व मामलों की सुनवाई एवं प्रकरणों के निराकरण के लिए ग्रामीणों को परेशानी उठानी पड़ रही है। क्षेत्रफल और जनसंख्या को देखते हुए तहसील कार्यालय में पर्याप्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों की नियुक्ति की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

एक राजस्व निरीक्षक के भरोसे पूरी तहसील

राजस्व निरीक्षक के दो पद स्वीकृत हैं, जिनमें से एक पद रिक्त है। ऐसे में पूरी तहसील का कामकाज एक राजस्व निरीक्षक के भरोसे चल रहा है। इससे सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि किसानों की भूमि संबंधी समस्याओं एवं राजस्व प्रकरणों के निराकरण की गति क्या होगी।

तहसील में 21 पटवारी हल्के हैं। इनमें दर्री, बनरांका, थानखम्हरिया, बेलतरा और पद्मी अतिरिक्त प्रभार में चल रहे हैं। अनेक पटवारियों के मुख्यालय में नहीं रहने की शिकायतें भी लगातार सामने आने की बात कही जा रही है। इसके चलते किसानों को नक्शा, खसरा, ऋण पुस्तिका, अभिलेख सुधार सहित छोटे-छोटे कार्यों के लिए भी भटकना पड़ रहा है। अनेक पटवारियों द्वारा अधिकारियों के आदेशों की अवहेलना किए जाने की शिकायतें भी सामने आ रही हैं।

शासकीय आवास का भी अभाव

तहसील में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए पर्याप्त शासकीय आवास उपलब्ध नहीं हैं। इसके कारण अनेक कर्मचारी किराये के मकानों पर रहने को मजबूर हैं, जबकि कुछ कर्मचारी प्रतिदिन आवागमन करते हैं। इससे उनकी कार्यक्षमता एवं कार्यालयीन व्यवस्था प्रभावित होने की बात कही जा रही है।

सरकार द्वारा आम जनता की अंतिम पंक्ति तक शासन की योजनाओं का लाभ पहुंचाने तथा राजस्व संबंधी नियमों के शिथिलीकरण की बात कही जाती है, लेकिन तहसील कार्यालय में अधिकारियों एवं कर्मचारियों की कमी के कारण जमीनी स्तर पर लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

अतिक्रमण भी बड़ी समस्या

थानखम्हरिया नगर में शासकीय भूमि पर अतिक्रमण एक ज्वलंत समस्या बनी हुई है। शासकीय भूमि उपलब्ध नहीं होने के कारण शासन की अनेक निर्माण योजनाएं भी धरातल पर नहीं उतर पा रही हैं। ऐसे में राजस्व विभाग द्वारा सख्ती बरतते हुए शासकीय भूमि को अतिर मण से मुक्त कराने तथा उपलब्ध भूमि का संरक्षण करने की नितांत आवश्यकता है।

क्षेत्रवासियों ने तहसील कार्यालय में रिक्त पदों पर शीघ्र नियुक्ति करने, अन्यत्र संलग्न कर्मचारियों को वापस बुलाने, पटवारियों की मुख्यालय में उपस्थिति सुनिश्चित करने तथा अधिकारियों-कर्मचारियों के लिए शासकीय आवास की व्यवस्था किए जाने की मांग की है।

ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल में धूमधाम से मनाई गई कृष्ण जन्माष्टमी

राधा-कृष्ण की वेशभूषा ने मोहा मन

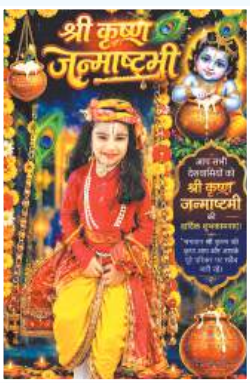

ब्यूरोचीफ अनिल सिंघानिया

थान खमरिया। हिंदुओं के प्रमुख एवं पवित्र त्योहार श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर नगर के ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल में जन्माष्टमी उत्सव बड़े हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय परिसर में भक्तिमय एवं उत्साहपूर्ण वातावरण बना रहा।

कार्यक्रम में नन्हे-मुन्ने बच्चों ने भगवान श्रीकृष्ण एवं राधा रानी की मनमोहक वेशभूषा धारण कर सुंदर प्रस्तुतियां दीं। विशेष आकर्षण फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता रहा, जिसमें बच्चों ने अपनी मनमोहक वेशभूषा और प्रस्तुतियों से उपस्थित अभिभावकों एवं शिक्षकों का मन मोह लिया।

इस दौरान विद्यालय परिसर को भगवान श्रीकृष्ण के जीवन से जुड़ी सुंदर झांकियों से सजाया गया। बच्चों ने श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं एवं उनके जीवन से जुड़े प्रसंगों को आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया।

विद्यालय प्रबंधन ने कहा कि ऐसे आयोजनों का उद्देश्य नई पीढ़ी को भारतीय संस्कृति, संस्कार एवं परंपराओं से जोड़ना है। बच्चों को भगवान श्रीकृष्ण के जीवन से प्रेरणा लेते हुए कर्म और धर्म के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया गया। इस अवसर पर विद्यालय की प्राचार्या ने सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व की शुभकामनाएं एवं बधाई दी तथा नगर एवं क्षेत्र की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना की।

तलरेजा ने पालिका ठेकेदार को ब्लैक लिस्टेड करने की मांग की

भाटापारा। नगर पालिका के सभापति सतीश तलरेजा ने मुख्य नगर पालिका अधकारी शिवकुमार यादव को एक लिखित ज्ञापन सौंपकर सेंटमैरी स्थित नाला निर्माण में लगे ठेकेदार को ब्लैक लिस्ट करते हुए अमानत राशि जब्त करने की मांग की है और उक्त निर्माण कार्यों के लिए पालिका प्रशासन द्वारा दुबारा टेंडर आमंत्रित करने की मांग करते हुए सेंटमैरी स्थित नाला निर्माण कार्य को फिर से कराने की मांग की है। तलरेजा ने कहा है कि मौजूदा ठेकेदार द्वारा किया गया नाला निर्माण घटिया क्वालिटी का है जिसके कारण चार वार्डों में इस बरसात के कारण पानी भराव की स्थिति उत्पन्न हो गई थी उक्त नाला के जल भराव के कारण जनता में भारी आक्रोश व्याप्त था। अतः ठेकेदार को ब्लैक लिस्टेड करते हुए उसके अमानत राशि को जब्त किया जाये।

रेल मंडल प्रबंधक से समस्या निराकरण की मांग की सदस्यों ने

ब्यूरोचीफ संतोष साहू

भाटापारा। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के रेल मंडल प्रबंधक दयानंद भाटापारा रेलवे स्टेशन के निरीक्षण में पहुंचे। इस दौरान रेलवे स्टेशन सलाहकार समिति के सदस्य अमरजीत सिंग सलूजा, वासु माखीजा, राजेश शर्मा, अभिषेक मोदी, रविन्द्र जैन, सुरेश भानुषाली, गौरव जैन, लक्ष्मी नारायण सोनी सहित प्रकाश मोदी व अन्य लोगो ने स्टेशन क्षेत्र में व्याप्त समस्याओं के निराकरण की मांग की जिसमें सड़क की हालत सुधारने अमृत भारत योजना के तहत कार्य को गति देने, अंबुजा रेलवे लाइन के फाटक के दोनो ओर बड़े बड़े गड्ढो को तत्काल भरने तथा रेलवे अंडर ब्रिज में जल निकासी व प्रकाश व्यवस्था को सुधारने के अलावा माता देवालय क्षेत्र की ओर लिफट एवं एस्किलेटर सुविधा उपलब्ध कराने तथा रेलवे प्लेटफार्म में फुड प्लाजा प्रारंभ करने की मांग की जिसपर रेल प्रबंधक ने सभी समस्याओं का यथोचित निराकरण का आश्वासन दिया है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी : नारायण भूषणिया द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड प्लाट नंबर-40/44 इंडस्ट्रीयल एरिया बीरगांव उरला रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित कराकर एच.डी.डी./49, फेस-2 मेन रोड, कबीर नगर रायपुर से प्रकाशित, संपादक-नारायण भूषणिया मो.नं. 09300491602, RNI पंजीयन क्रमांक: CHHHIN/2010/34778, Email ID- krantirath.cg@gmail.com, / web- www.krantirath.com